वर्ष-12 अंक-2
फरवरी 2021
मूल्य- ₹5
RNI No. DELBIL/2016/66244
माघ/फाल्गुन | वि.स. 2077 | नई दिल्ली से प्रकाशित

ॐ राष्ट्र का आध्यात्मिक प्रहरी 卐

राष्ट्रीय मासिक

दिव्य शनि प्रसन्नता पत्र

www.manubhaiya.com / www.shanidhammanubhaiyaji.com

वीर हकीकत राय

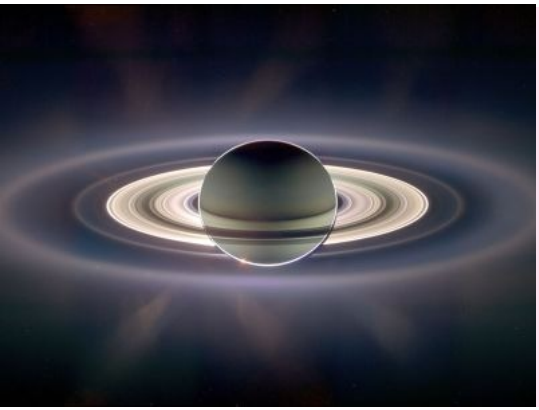

नमो नमो शनि भक्त-वत्सलाय

शनिदेव अन्तःकरण के प्रतीक हैं। बाह्य प्रवृत्तियों और आंतरिक चेतना को मिलाने में पुल का कार्य करते हैं। अहं भाव द्योतक हैं। आत्मज्ञान, तत्वज्ञान, स्वतंत्र विचार, आत्म संयम, धैर्य, दृढ़ता, गाम्भीर्य, विचारशीलता के प्रतीक हैं। शरीर की हड्डियाँ, नीचे के दाँत, बड़ी आँतें एवं मांसपेशियों पर प्रभाव डालते हैं।

शनि भक्त

मनु भैया जी

मंत्र चिकित्सा
या साबिर हक़ साबिर
REDMI NOTE 9 PRO MAX

मंत्र चिकित्सा
या साबिर हक़ साबिर

चिकित्सा

REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

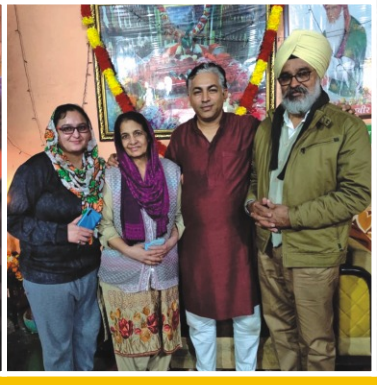

RNI No. DELBIL/2010/32642

राष्ट्रीय मासिक

दिव्य शनि प्रसन्नता पत्र

फरवरी 2021 वर्ष-12 अंक-2

संरक्षण: श्री शनिदेव महाराज व शाबिर पिया जी

आशीर्वाद: पिता डॉ. राजवीर त्यागी एवं माता श्रीमती जयश्री देवी

मुख्य संरक्षक: राजवीर सारस्वत

प्रधान सम्पादक: विजेन्द्र गोयल

सम्पादक व मुख्य संचालक: मनु भैया जी

सह-सम्पादक: नीतू त्यागी

संचालक मंडल:

- यजुष राव
- कपिल कुमार
- रवेल सिंह (जग्गा)
- पूर्णिमा त्यागी
- संजीव कपूर
- बोधराज गैरे
- कुमारी प्रतिभा
- कुमारी तान्या
- जसमीत सिंह
- राजन शर्मा
- रामानन्द
- ऋषभ शर्मा
- दीपक कुमार
- रश्मि रेखा

E-mail: shanibhaktmanu225@gmail.com
Web: www.manubhaiya.com/
www.shanidhammanybhaiyaji.com

पत्राचार हेतु पता:
'शनि धाम मनु भैया जी', प्लॉट नं. 15, गली नं. 1, गोयला डेयरी रोड, दीनपुर, श्याम विहार-2, ज्योति गार्डन के पीछे, नई दिल्ली-110043

सहयोग हेतु

Pay your Cheque / Demand Draft in favour of
SHANI DHAM MANU BHAIYA JI
or you can deposit cash/cheque in our below A/c & confirm us
PUNJAB & SIND BANK
(Mahavir Enclave, New Delhi Branch)
Current A/c No.: 13221100000174
RTGS/NEFT IFS Code: **PSIB0021322**

धाम के कानूनी सलाहकार: एडवोकेट मनजीत सिंह

Printed by: Vijender Kumar Goel
Published by: Vijender Kumar Goel
On behalf of: Vijender Kumar Goel
Printed at: Printways, G-19, Vijay Chowk, Laxmi Nagar, Delhi-92,
Published at: H-3/26, Ist Floor, Bengali Colony, Mahavir Enclave, Palam, New Delhi-110045
Editor: Vijender Kumar Goel

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों के सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोणों के लिये प्रकाशक व सम्पादक पूर्णतया या आंशिक रूप से भी उत्तरदायी नहीं। लेखक स्वयं उत्तरदायित्व होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र दिल्ली-नई दिल्ली होगा।

सरस्वती वन्दना

शुक्लवर्ण वाली, सम्पूर्ण चराचर जगत में व्याप्त, आदिशक्ति, सभी भयों से भयदान देने वाली, अज्ञान के अंधेरों को मिटाने वाली, हाथों में वीणा, पुस्तक व स्फटिक की माला धारण करने वाली एवं पद्मासन पर विराजमान बुद्धि प्रदान करने वाली, सर्वोच्च ऐश्वर्य से अलंकृत, भगवती शारदा की मैं वन्दना करता हूँ।

इस दिव्य अंक में

4 ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या / शास्त्रीय संगीत
5 जय शनिदेव
6 वीर हकीकत राय
7 संस्कारी संतान हेतु माता का दायित्व
8 महर्षि याज्ञवल्क्य / भगवान शंकर द्वारा सात वारों का निर्माण
9 ननकाना साहिब गुरद्वारा / पृथ्वी खींचती है
10 हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालज्ञ थे
11 चाँद बावड़ी: विश्व की सबसे बड़ी बावड़ी / पिरामिड
12 अष्टावक्र / सच्चा डॉक्टर
13 भागवतमहापुराण की विलक्षण महिमा
14 शनि दीपदान विधि
15 वन संस्कृति और भारत / मॉरीशस में हिन्दू संस्कार
16 यज्ञ: सृष्टि का संरक्षक / पं. दीनदयाल उपाध्याय
17 श्रद्धा के फूल / जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु:
18 भक्त शिरोमणी नरसी मेहता / कीर्तन की महिमा
19 विश्व प्रसिद्ध सांस्कृतिक महोत्सव 'पुरी रथयात्रा' / गौ उत्पादों को प्रयोग में लायें
20 नाम की महिमा / इच्छापूर्ति वृक्ष
21 भगवा ध्वज आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक / पाश्चात्य जगत और हम
22 कर्म ही साथ जाते हैं
23 जनमजेय के भाइयों को शाप
24 गणेश जी द्वारा चन्द्रमा को शाप
25 श्री चतुर चिंतामणि नागा जी महाराज

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या

'गोप्रेमी' विजेन्द्र गोयल, प्रधान संपादक

संसार के सभी प्राणी सुख चाहते हैं। सुधारवादी लोग ऐसी व्यवस्था लाने का प्रयत्न करते हैं, जिसमें सभी प्राणी सुख का अनुभव करें। ऐसी कोई-सी भी व्यवस्था आज तक स्थापित नहीं हो सकी, परंतु ऐसी व्यवस्था के स्थापन की कल्पना की जा सकती है। सम्भव है किसी दिन वह कल्पना सत्य सिद्ध हो, परंतु ऐसी व्यवस्था में भी मृत्यु का दु:ख तो बना ही रहेगा और ऐसी आदर्श और समृद्ध सामाजिक व्यवस्था में मृत्यु का दु:ख और भी अधिक तीव्र होगा। ऐसा समाज, जहाँ हर प्रकार से मन रम रहा हो, छोड़ने में अधिक कष्ट होता है। संसार के भोग्य पदार्थों में यदि सुख देने की शक्ति है तो अवश्य ही उनका विछोह दु:खदायक सिद्ध होगा। मृत्यु की मार दुहरी होती है। जब किसी प्राणी की मृत्यु होती है तो वह स्वयं कष्ट पाता है और उसके प्रियजन भी दारुण दु:ख का अनुभव करते हैं।

प्रश्न यह है कि संसार से मृत्यु का दु:ख कैसे दूर किया जाये? जब तक यह दु:ख दूर नहीं होता, तब तक संसार दु:खरूप है। न केवल अंतिम परिणाम में परंतु प्रतिक्षण भी। कल्पना कीजिये कि आप गाड़ी में चल रहे हैं। मित्र-मण्डली है, आमोद-प्रमोद के साधन हैं। इसी समय समाचार मिलता है कि ऊपर से बम-वर्षा होने वाली है तो क्या आप इन सब सुख के साधनों को भोगने की मन:स्थिति में रह सकते हैं? संसार में जो कुछ क्षणिक सुख का हम अनुभव करते हैं, उसका कारण अज्ञान है। हम अपने और अपने प्रियजनों के अंतिम परिणाम पर विचार नहीं करते।

संसार की प्रत्येक जड़-चेतन वस्तु का अंत निश्चित है। जो नाशवान् है, वह सत्य नहीं हो सकता। वह सब स्वप्न है। जो परिवर्तनशील है, वह सत्य नहीं हो सकता। जो बीत चुके हैं, वे भोग, वे प्रियजन, वे सुख-दु:ख हमारे लिये स्वप्नवत् ही हैं। जो होगा, उसके भी हम केवल स्वप्न देखते हैं। जो वर्तमान है, वह भूत बनता जा रहा है। अत: वह भी स्वप्न बनता जा रहा है। अत: संसार स्वप्न है, माया है, मिथ्या है।

हम अपने प्रत्येक कर्म से कितना ईश्वर के निकट पहुँचते हैं या उससे दूर हटते हैं, यही सत्य है और हम अपने प्रत्येक कर्म से संसार को कितना अपनी ओर खींचने में समर्थ होते हैं, यह सब मिथ्या है। जो साहित्य अध्यात्म की ओर अग्रसर करने वाला हो, वह सत्य है। शेष सारा साहित्य मिथ्या है या उतने ही अंशों में सत्य है, जितने से अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त होता हो।

इस जाग्रत संसार में दु:ख-शोक में डूबे हुए लोगों को यह समझाना है कि अविनाशी आनन्द का जो स्रोत है, वह कभी नष्ट नहीं होता। यह अविनाशी सुख सबको सुलभ है तथा यही सत्य है। यह ज्ञान नई आशा और नये उत्साह को जन्म देता है। सुख का अभाव दु:ख नहीं है। जब तक राग है, तभी तक सुख का अभाव दु:ख है। राग के नष्ट होते ही सुख का अभाव दु:ख नहीं, आनन्द है। जो सुख-दु:ख दोनों से परे है, वही आनन्द है। वह किसी की अनुकूलता-प्रतिकूलता, भोग्य पदार्थों की प्राप्ति-अप्राप्ति, जीवन-मरण के अधीन नहीं है। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' कहने का यही अभिप्राय है।

मास के त्यौहार

7 फरवरी (रविवार) षट्तिला एकादशी व्रत (स्मार्त) • 8 फरवरी (सोमवार) षट्तिला एकादशी व्रत (वैष्णव) • 11 फरवरी (बृहस्पतिवार) मौनी अमावस्या • 12 फरवरी (शुक्रवार) कुम्भ संक्रांति • 16 फरवरी (मंगलवार) वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, वीर हकीकत राय बलिदान दिवस • 23 फरवरी (मंगलवार) जया एकादशी • 27 फरवरी (शनिवार) माघी पूर्णिमा, संत रविदास जयन्ती

शास्त्रीय संगीत

सामवेद द्वारा संगीत भारतीय विज्ञान की बहुत बड़ी देन है। संगीत के सात स्वरों में हमारे संगीत शास्त्रियों ने संसार की सब बोलियों को बाँध दिया है। ये सात स्वर प्रकृति के सात रहस्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इनमें एक अज्ञात रहस्यमय शक्ति विद्यमान है। इसका प्रभाव प्रकृति और मानव पर बहुत ही शीघ्र पड़ता है। संगीत एक जादू है।

प्रसिद्ध है कि बैजू बावरा ने 'माल कोस' राग के द्वारा पत्थर को मोम बना दिया था। तानसेन ने 'मेघ राग' द्वारा वर्षा कर दी थी व 'दीपक राग' द्वारा दीप जला दिये थे। भगवान कृष्ण के वंशीवादन के सम्बन्ध में कौन नहीं जानता? रागों द्वारा मन, मस्तिष्क व शरीर के बड़े-बड़े पेचीदा एवं जटिल रोगों का समाधान किया जा सकता है।

वैज्ञानिकों ने ऐसी ध्वनियाँ निकाली हैं, जिनके बजाने से कृषि की फसल व गाय के दूध में वृद्धि की जा सके। विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति और बुद्धि को तीव्र करने के लिये नाद ध्वनि अथवा स्वर शब्द शक्ति का प्रयोग किया जा रहा है।

जय शनिदेव

शनि भक्त मनु भैया जी, सम्पादक व मुख्य संचालक

जगत कल्याणकारी श्री शनिदेव भगवान की चरण रज का पिपासु मैं अकिंचन 'मनु' आप सभी भक्तों को सादर प्रणाम करता हूँ। **'बृहद् शनि महिमा ग्रंथ'** की प्रति का जिन भक्तों ने पठन किया, उन्होंने हमें इस पत्र की सफलता के लिये आशीर्वाद दिया तथा सराहना के पुष्प हमें फोन तथा पत्र द्वारा भेजे गये, जिसके लिये हमारा सम्पादक मंडल आप सभी भक्तों के कल्याण के लिए शनि भगवान से प्रार्थना करता है।

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति शब्द से मानी गई है। प्रत्येक शब्द वायुमण्डल में विचरण करता है। शब्द शक्ति जो किसी भी रूप में हो (बीज मंत्र, सद्भावना शब्द, आशीर्वादमयी वाणी) स्पंदनशील (शक्तिवर्द्धक) होकर कल्याणकारी तथा विनाशकारी (श्राप, अपशब्द) का प्रभाव मानव जीवन पर शीघ्रातिशीघ्र फलित होता रहता है।

इसमें बीज मंत्रों में लोगों के कल्याण की शक्ति सर्वाधिक निहित रहती है, जब हम विधान से मंत्र जप करते हैं, बीज मंत्र में निहित शक्ति से हम आरोग्य हो जाते हैं और सुख-समृद्धि की प्राप्ति हमें होती है। इसके अलावा बीज मंत्रों में विस्फोटक शक्तियाँ भी निहित होती हैं, जिससे किसी का विनाश करने के लिए साधक (तांत्रिक) लोग उपयोग किया करते हैं, अगर सही से किसी भी देव का मंत्र जप हम करते हैं तो शब्द शक्ति जो कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भेदकर शीघ्रातिशीघ्र वापस लौटती है। हमारे शरीर के रोम कूप द्वारा देव आशीर्वाद (बीज मंत्र- जिस देवता का हो) प्रविष्टि करती है जिससे शरीर के अंगों का बार-बार फड़कना, (कंधों पर दबाव से उनका हिलना, अगर बीज मंत्र तत्व प्रधान हैं तो मानव शरीर पर उस तत्व का कायिक प्रभाव हम पाते हैं), जब हम मंत्रों की सार्थकता को प्राप्त करते हैं तो हमें शब्द चलते फिरते नजर आते हैं। (हमारी पुस्तक शनि प्रसन्ता मंत्र में हनुमान यंत्र इसका एक उदाहरण है।)

यह शब्द बीज शक्तियाँ काल और उपयुक्त समय पर किये गये प्रयोग से अत्यधिक लाभकारी होती हैं और व्यक्ति विशेष को प्रभावशाली व जीवन उपयुक्तता के साथ समृद्धि प्रदान करती है।

द्विजों द्वारा दिये गये प्रत्येक अनुष्ठान, यज्ञ, हवन (जिनमें मंत्र जाप) किया जाता है अवश्यम्भावी लाभ यजमान को या उन्हें स्वयं भी प्राप्त होता है। अभी तक हमारे द्वारा किये गये जप का लाभ भी भक्तों को अनेकानेक रूपों (सुख समृद्धि, रोग मुक्ति, पितृ संतुष्टि आदि) में मिला है।

भारतीय पुराणों और वेदों में निहित मंत्रों में कुछ विशिष्ट बीज मंत्रों के प्रभाव कालसीमा को भेदने वाले भी हैं जैसे (ॐ त्र्यम्बकं यजामहे)। विशेष ध्यान रहे, साधक की आस्था व अत्यधिक विश्वास से भगवान के दर्शन आशीर्वाद (बीज मंत्र जिस देवता का हो) की प्राप्ति/प्राप्तिफल से ऊपर भी हो सकती है।

कलियुग में जागृत शनिदेव भगवान का बीज मंत्र और उसके साथ प्रभावी चमत्कारिक नाम के उच्चारण से आप सभी भक्तजन ग्रह जनित पीड़ा में तुरंत लाभ प्राप्त कर सकते हैं। (ॐ शं सौरये नमः) जो उनके साथ-साथ भगवान सूर्यदेव की प्रसन्नता का भी सार हमें दिलाता है, जिसकी तीक्ष्ण किरणों (जिसमें धनात्मक विकीर्ण- प्रथम अंक) किसी भी ग्रह की अपेक्षा अत्यधिक मात्रा में होती हैं, का २३,००० जप कर शनि व सूर्य दोनों को प्रसन्न किया जा सकता है। (किसी भी व्यक्तिगत समस्या के लिए भी जाप कर सकते हैं व आवश्यकता पड़ने पर शनि भक्त मनु से मंत्र जप की विधि जान सकते हैं।)

अभी तक हमने असंख्य लोगों को शपथ दिलाकर पाठ बताया है। ९०% लोगों के शनि कृपा से कार्य सम्पन्न हुए जिन १०% लोगों का कार्य विलम्ब हुआ उनसे मेरी प्रार्थना है कि पाठ करते रहें, कई बार भारी विपद का समय हमारे ऊपर आने को होता है और उसी समय किसी समस्या को लेकर हम पाठ कर रहे होते हैं इसीलिए पाठ के समय वह विपद या कष्ट ईश्वर टालते हैं, अब चूंकि पाठ इतना ज्यादा नहीं होता, की दोनों कार्य एक साथ हो सकें इसलिए मेरी सभी भक्तों से विनती है कि पाठ जारी रखें, आप सभी को मेरे ईष्ट की कृपा प्राप्ति हो।

तू ही माता पिता, मेरा बहन तू भैया है,
मैं सुदामा हूँ तेरा, तू मेरा कन्हैया है।
तू ही भक्तों की लाज का शनि रखैया है,
'मनु' मन बार-बार लेता तेरी बलैया है।।

ॐ नमः शिवाय ॐ ॐ नमः शिवाय ॐ

शनिवार उपवास करे,
पूजे शिव भगवान।
शत्रु पर विजय पाये वो,
हर विधि हो कल्याण।।

वस्त्र काले रंग का,
या फिर काली गाय।
शनि दिवस को दान करें,
ग्रह दशा का उपाय।।

पीपल में प्रभु वास है,
जो जल दे शनिवार।
उस पर देव दया करें,
नाव लगावे पार।।

ॐ नमः शिवाय ॐ ॐ नमः शिवाय ॐ

वीर हकीकत राय

जब भारत पर मुगलों का शासन था, तब की यह घटित घटना है: चौदह वर्षीय हकीकत राय विद्यालय में पढ़नेवाला सिंधी बालक था। एक दिन कुछ बच्चों ने मिलकर हकीकत राय को गालियाँ दीं। पहले तो वह चुप रहा। वैसी भी सहनशीलता तो हिन्दुओं का गुण है ही... किंतु जब उन उद्दण्ड बच्चों ने गुरुओं के नाम की और झूलेलाल जी व गुरु नानक जी के नाम की गालियाँ देनी शुरू कीं, तब उस वीर बालक से अपने गुरु और धर्म का अपमान सहा नहीं गया।

हकीकत राय ने कहा, 'अब हद हो गयी। अपने लिए तो मैंने सहनशक्ति का उपयोग किया लेकिन मेरे धर्म, गुरु और भगवान के लिए एक भी शब्द बोलोगे तो उसे बर्दाश्त करना मेरी सहनशक्ति से बाहर की बात है। मेरे पास भी जुबान है। मैं भी तुम्हें बोल सकता हूँ।' उद्दण्ड बच्चों ने कहा, 'बोलकर तो दिखा, हम तेरी खबर ले लेंगे।' हकीकत राय ने भी उनको दो-चार कटु शब्द सुना दिये। बस, उन्हीं दो-चार शब्दों को सुनकर मुल्ला-मौलवियों का खून उबल पड़ा। वे हकीकत राय को ठीक करने का मौका ढूँढ़ने लगे। सब लोग एक तरफ और अकेला हकीकत राय दूसरी तरफ।

हकीकत राय को जेल में कैद कर दिया गया। मुगल शासकों की ओर से हकीकत राय को यह फरमान भेजा गया कि 'अगर तुम कलमा पढ़ लो और मुसलमान बन जाओ तो तुम्हें अभी माफ कर दिया जायेगा और यदि तुम मुसलमान नहीं बनोगे तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।'

हकीकत राय के माता-पिता जेल के बाहर आसूँ बहाते हुए कह रहे थे कि 'बेटा! तू मुसलमान बन जा। कम-से-कम हम तुम्हें जीवित तो देख सकेंगे।' किंतु उस धर्म पर मिटने वाले बुद्धिमान बालक ने कहा, 'क्या मुसलमान बन जाने के बाद मेरी मृत्यु नहीं होगी?' माता-पिता, 'मृत्यु तो होगी।' हकीकत राय, 'तो फिर मैं अपने धर्म में ही मरना पसंद करूँगा। मैं जीते-जी दूसरों का धर्म स्वीकार नहीं करूँगा।'

क्रूर शासकों ने हकीकत राय की दृढ़ता

देखकर उसे अनेकों धमकियाँ दीं, किंतु उस बहादुर किशोर पर उनकी धमकियों का जोर न चल सका। उसके दृढ़ निश्चय को पूरा राज्य शासन भी न डिगा सका।

अंत में मुगल शासक ने उसे प्रलोभन देकर अपनी ओर खींचना चाहा, परंतु वह बुद्धिमान व वीर किशोर प्रलोभनों में नहीं फँसा। आखिर क्रूर शासकों ने आदेश दिया, 'अमुक दिन बीच मैदान में ही हकीकत राय का शिरोच्छेद किया जायेगा।' उस वीर हकीकत राय ने गुरु से मंत्र ले रखा था। गुरुमंत्र जपते-जपते उसकी बुद्धि सूक्ष्म हो गयी थी। वह चौदह वर्षीय किशोर जल्लाद के हाथ में चमचमाती हुई तलवार देखकर जरा भी भयभीत न हुआ, वरन् वह अपने गुरु के दिये हुए ज्ञान को याद करने लगा कि, 'यह तलवार किसको मारेगी?' मार-मारकर इस पंचभौतिक शरीर को ही तो मारेगी और ऐसे पंचभौतिक शरीर तो कई बार मिले और कई बार छूट गये। तो क्या यह तलवार मुझे मारेगी? नहीं। मैं तो अमर आत्मा हूँ। परमात्मा का सनातन अंश हूँ। मुझे यह कैसे मार सकती है?

हकीकत राय गुरु के इस ज्ञान का चिंतन कर रहा था, तभी क्रूर काजियों ने जल्लाद को तलवार चलाने का आदेश दिया। जल्लाद ने तलवार उठायी लेकिन उस निर्दोष बालक को देखकर उसकी अंतरात्मा थरथरा उठी। उसके हाथों से तलवार गिर पड़ी और हाथ काँपने लगे। काजी बोले, 'तुझे नौकरी करनी है कि नहीं? यह तू क्या कर रहा है?'

तब हकीकत राय ने अपने हाथों से तलवार उठायी और जल्लाद के हाथ में थमा दी। फिर वह किशोर आँखें बंद करके परमात्मा का चिंतन करने लगा, 'हे अकाल पुरुष! जैसे साँप केंचुली का त्याग करता है, वैसे ही मैं यह नश्वर देह छोड़ रहा हूँ। मुझे अपने चरणों की प्रीति देना ताकि मैं तेरे चरणों में पहुँच जाऊँ... फिर से मुझे वासना का पुतला बनकर इधर-उधर न भटकना पड़े... अब तू मुझे अपनी ही शरण में रखना। मैं तेरा हूँ, तू मेरा है, हे मेरे अकाल पुरुष।' इतने में जल्लाद ने तलवार चलायी और हकीकत राय का सिर धड़ से अलग हो गया। हकीकत राय ने 14 वर्ष की नन्हीं-सी उम्र में धर्म के लिए अपनी कुर्बानी दे दी। उसने शरीर छोड़ दिया, लेकिन धर्म नहीं छोड़ा।

गुरु तेगबहादुर बोलिया, सुनो सिखो!
बड़भागिया, धड़ दीजे धरम न छोड़िये...

हकीकत राय ने अपने जीवन में यह चरितार्थ करके दिखा दिया। हकीकत राय तो धर्म के लिए बलिवेदी पर चढ़ गया लेकिन उसकी कुर्बानी ने सिंधी समाज के हजारों-लाखों जवानों में एक जोश भर दिया कि 'धर्म की खातिर प्राण देने पड़ें तो देंगे लेकिन विधर्मियों के आगे कभी नहीं झुकेंगे। भले अपने धर्म में भूखों मरना पड़े तो स्वीकार है लेकिन परधर्म को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।'

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है, सत्य के समान कोई तप नहीं है, राग के समान कोई दुःख नहीं है और त्याग के समान कोई सुख नहीं है। पापकर्मों से दूर रहना, सदा पुण्यकर्मों का अनुष्ठान करना, साधु पुरुषों के-से बर्ताव और सदाचार का पालन करना– यह कल्याण का सर्वोत्तम साधन है।

संस्कारी संतान हेतु माता का दायित्व

गर्भावस्था की अवधि में एक दिन महारानी मदालसा ने महाराज से पूछा- 'आपको कैसा पुत्र चाहिए?' आश्चर्य व्यक्त करते हुए राजा ने कहा प्रजा को इस समय ऐसे संतों की जरूरत है जो उसे धर्माचरण के लिए प्रेरित कर सके, पर क्या तुम ऐसी संतान पैदा कर सकती हो? रानी मदालसा ने कहा, राजन्! यह संभव है। केवल संकल्प की दृढ़ता चाहिए। हर क्षण अपनी विचारणा एवं भावना के साथ वह गर्भस्थ शिशु को ऐसी खुराक पहुँचाती रहीं, जिससे अभीष्ट साँचे में ढलने में उसे मदद मिल सके।

गर्भ की अवधि पूरी हुई। बालक जन्मा दूध पिलाते समय, लोरी सुनाते समय, झूले में झुलाते समय मदालसा मन ही मन यही भाव संप्रेषित करतीं- 'पुत्र! तू शुद्ध बुद्ध है, निरंजन है, शरीर नहीं आत्मा है। संसार माया है। तू सांसारिक आकर्षणों से विरत रहकर अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर।' समझ आते ही बालक में बीजारोपित संस्कार अंकुरित-पल्लवित एवं पुष्पित होने लगे, संत के लक्षण बालक के आचरण में प्रकट होने लगे।

ऐसे चार बच्चे समय के अंतराल से पैदा हुए। चारों ही संन्यासी बने। निस्पृह, अनासक्त और वैरागी। राजपाट की उन्हें कोई चिंता नहीं रहती। धर्मचेतना का अलख जगाने पीड़ितों को उठाने की मस्ती में ही वे डूबे रहते। तप-तितिक्षा में साधना और सेवा में उन्हें जो आनंद मिलता, उसके समक्ष राज्य के वैभव से मिलने वाला सुख तुच्छ जान पड़ता।

अब महाराज की चिंता बढ़ी कि अधेड़ आयु हो चली, चारों बच्चे संन्यासी हो गए, राज्य की देखभाल कौन करेगा, विपुल वैभव को कौन सँभालेगा, इस विषय पर वे जितना सोचते, चिंता उतनी ही बढ़ती जाती। महारानी पाँचवी बार गर्भवती हुई थी। इस बार भी यदि बालक संत के संस्कार लेकर पैदा होता है तो आशा की ज्योति सदा-सर्वदा के लिए बुझ जाएगी तथा शासन की बागडोर किसी दूसरे के हाथों में सौंपनी होगी, यह व्यथा-वेदना राजा को खाए जा रही थी।

उनकी हालत अधिक समय तक महारानी से छिपी न रह सकी। एक दिन वे पूछ ही बैठीं- 'राजन्! इन दिनों मैं आपको कुछ अधिक ही चिंतित-व्यथित देख रही हूँ। आपकी चिंता को दूर करने में यह अकिंचन क्या कुछ मदद कर सकती है?' थोड़ा सकुचाते हुए राजा बोले- 'महारानी मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि संत किसी भी देश की आत्मा होते हैं, पर शासन की बागडोर संभालने वाला भी तो कोई चाहिए। मेरी चिंता इसलिए बढ़ती जा रही है कि भविष्य में इस राज्य का संचालन करने वाले समर्थ हाथ नहीं दिखाई पड़ते।'

अब महारानी ने अपनी विचारणा एवं भावना को नई दिशा में मोड़ा। गर्भस्थ शिशु को सम्राट बनाने की तैयारी चलने लगी। आहार-विहार से लेकर चिंतन, विचारणा सभी में यह भाव समाया रहता कि गर्भ में पल रहे शिशु को शासक बनाना है। महारानी स्वयं भी अपना अधिकांश समय ऐसे कार्यों में व्यतीत करती थीं, जिससे वीरोचित भावों को पुष्टि मिल सके। घुड़सवारी करना, तीरंदाजी करना, वीरता की गाथाएँ सुनना, उनकी दिनचर्या के अंग बन चुके थे। चिंतन के एकांत क्षण ऐसे ही भावों को संप्रेषित करने में व्यतीत होते थे, जिससे भीतर पल रहे शिशु को साहस एवं पराक्रम के गुणों का पोषण मिल सके।

निश्चित समय पर शिशु का जन्म हुआ। उसका देदीप्यमान चेहरा ही उसकी तेजस्विता का परिचय दे रहा था। बालक दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। आरोपित संस्कारों को अनुकूल वातावरण में पोषण मिला। प्रशिक्षण की समग्र व्यवस्था बनी। सम्राट के योग्य सभी गुणों को पाकर राजा ने संन्यास ग्रहण कर तप हेतु प्रस्थान कर दिया।

सचमुच ही संकल्पनिष्ठ माताएँ मनचाही संतान को जन्म दे सकने में पूरी तरह समर्थ हैं।

बिल्ववृक्ष का महत्व

बिल्ववृक्ष साक्षात् महादेवस्वरूप है, देवों के द्वारा भी इसकी स्तुति की गई है। संसार के जितने भी प्रसिद्ध तीर्थ हैं, वे सब तीर्थ बिल्व के मूल में निवास करते हैं। जो प्राणी बिल्ववृक्ष के मूल में शिवजी के मस्तक पर अभिषेक करता है, वह समस्त तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्त कर पवित्र हो जाता है। जो व्यक्ति गन्ध-पुष्पादि से बिल्ववृक्ष के मूल का पूजन करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता है।

जो भाग्यवान् पुरुष बिल्ववृक्ष के मूल में आदरपूर्वक दीपमाला का दान करता है, वह महादेव के सान्निध्य को प्राप्त हो जाता है। जो पुरुष भक्तिपूर्वक बिल्ववृक्ष के नीचे एक शिवभक्त को भोजन कराता है, उसे असंख्य मनुष्यों को भोजन कराने का पुण्य प्राप्त होता है। जो व्यक्ति बिल्ववृक्ष के नीचे दूध और घी से युक्त अन्न को किसी शिवभक्त को प्रदान करता है, वह दरिद्र नहीं रह जाता।

महर्षि याज्ञवल्क्य

महान दार्शनिक एवं विधिवेत्ता महर्षि याज्ञवल्क्य की जयन्ती कार्तिक शुक्ल द्वादशी को मनाई जाती है, जो हिन्दू परम्परा में 'योगेश्वर द्वादशी' के नाम से जानी जाती है। महर्षि याज्ञवल्क्य के पिता का नाम ब्रह्मरथ और माता का नाम देवी सुनन्दा था। पिता ब्रह्मरथ वेद-शास्त्रों के परम ज्ञाता थे। माता ऋषि सकल की पुत्री थी।

महर्षि याज्ञवल्क्य यज्ञ सम्पन्न कराने में इतने कुशल थे कि उनको याज्ञिक-सम्राट कहा जाता है। यज्ञ सम्पादन में उनकी इस सिद्ध-हस्तता के कारण ही उनका नाम 'याज्ञवल्क्य' पड़ा। याज्ञवल्क्य शब्द स्वयं दो शब्दों का योग है- याज्ञ और वल्क्य अर्थात् यज्ञ सम्पादन कराना, जिनके लिए यज्ञ वस्त्र बदलने के समान सहज और सरल था।

महर्षि याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थीं, मैत्रेयी और कात्यायनी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी थी। महर्षि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के मध्य अनश्वरता पर हुए प्रसिद्ध संवाद का बृहदारण्य कोपनिषद् में उल्लेख मिलता है। महर्षि याज्ञवल्क्य की दूसरी पत्नी कात्यायनी, जो ऋषि भारद्वाज की पुत्री थीं, इनसे इनके तीन पुत्र थे - चन्द्रकान्त, महामेघ और विजय।

एक बार राजा जनक को ब्रह्मविद्या जानने की इच्छा हुई। इसके लिए उन्होने एक शास्त्रार्थ का आयोजन किया, जिसमें यह शर्त रखी गयी कि जो भी ब्रह्मविद्या का परम ज्ञाता होगा, उसे स्वर्ण मण्डित सींगों वाली एक हजार गायें दी जायेंगी। इस शास्त्रार्थ में महर्षि याज्ञवल्क्य के अलावा कोई भी भाग लेने का साहस नहीं जुटा पाया। उनसे ब्रह्मविद्या विषयक बहुत से प्रश्न पूछे गये। जिनका उन्होंने बड़ी सहजता व सटीकता से उत्तर दिया और अन्त में शास्त्रार्थ में विजयी हुए। इन्होंने ही प्रयाग में ऋषि भारद्वाज को श्रीराम के पावन चरित्र का श्रवण कराया था, जिसका उल्लेख गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने श्रीरामचरितमानस में किया है।

प्रयागराज में महर्षि याज्ञवल्क्य, उनके आध्यात्मिक गुरू एवं उनकी पत्नियों- कात्यायनी व मैत्रेयी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। इसी प्रकार दक्षिण अरकोट जिले में कुड्डालोर के पास सोर्नावूर में बंगलूर शहर में एवं वाराणसी में महर्षि याज्ञवल्क्य के मन्दिर हैं।

महर्षि याज्ञवल्क्य का हिन्दू धर्म एवं संस्कृति में अतुल्य एवं महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महर्षि याज्ञवल्क्य शुक्ल यजुर्वेदकार रहे हैं। बृहदारण्यकोपनिषद् याज्ञवल्क्य स्मृति, शतपथ ब्राह्मण, प्रतिज्ञासूत्र, योग याज्ञवल्क्य आदि ग्रंथ महर्षि याज्ञवल्क्य के हिन्दू धर्म एवं संस्कृति को अमूल्य योगदान हैं।

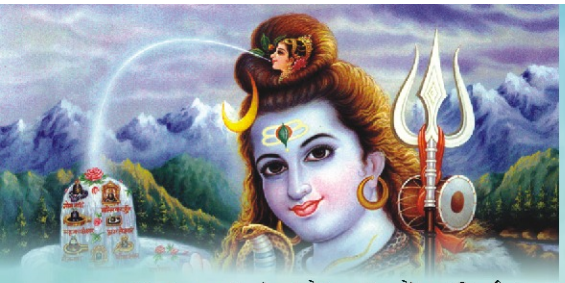

भगवान शंकर द्वारा सात वारों का निर्माण

भगवान शंकर ने सात वारों का निर्माण कर उनके स्वामियों को निश्चित किया। ये सब-के-सब स्वामी ग्रह-नक्षत्रों के ज्योतिर्मय मण्डल में प्रतिष्ठित हैं। शिव के वार या दिन के स्वामी सूर्य हैं। शक्ति संबंधी वार के स्वामी सोम हैं। कुमार संबंधी दिन के अधिपति मंगल हैं। विष्णुवार के स्वामी बुध हैं। ब्रह्माजी के वार के अधिपति बृहस्पति हैं। इन्द्रवार के स्वामी शुक्र हैं और यमवार के स्वामी शनैश्चर हैं। अपने-अपने वार में की हुई उन देवताओं की पूजा उनके अपने-अपने फल को देने वाली होती है।

सूर्य आरोग्य के और चन्द्रमा सम्पत्ति के दाता हैं। मंगल व्याधियों का निवारण करते हैं, बुध पुष्टि देते हैं, बृहस्पति आयु-वृद्धि करते हैं, शुक्र भोग देते हैं और शनैश्चर मृत्यु का निवारण करते हैं। ये सात वारों के क्रमशः फल हैं, जो उन-उन देवताओं की प्रीति से प्राप्त होते हैं।

इष्टदेव के नाममंत्रों का जप आदि साधन, वार के अनुसार फल देते हैं। रविवार को सूर्यदेव के लिये विशिष्ट वस्तु अर्पित करें। यह विशिष्ट फल देने वाला तथा इससे पापों की शांति होती है। विद्वान पुरुष सोमवार को सम्पत्ति की प्राप्ति के लिये लक्ष्मी की पूजा करे तथा सपत्नीक ब्राह्मणों को घृतपक्व अन्न का भोजन कराये। मंगलवार को रोगों की शांति के लिये काली की पूजा करे तथा उड़द, मूंग व अरहड़ की दाल आदि युक्त अन्न से ब्राह्मणों को भोजन कराये।

विद्वान पुरुष बुधवार को दधियुक्त अन्न से भगवान विष्णु का पूजन करे- ऐसा करने से सदा पुत्र, मित्र और स्त्री आदि की पुष्टि होती है। जो दीर्घायु होने की इच्छा रखता हो, वह गुरुवार को देवताओं की पुष्टि के लिये वस्त्र, यज्ञोपवीत तथा घृतमिश्रित खीर से यजन-पूजन करे। भोगों की प्राप्ति के लिये शुक्रवार को एकाग्रचित्त होकर देवताओं का पूजन करे और ब्राह्मणों की तृप्ति के लिये छः रसयुक्त अन्न का दान करे। स्त्रियों की प्रसन्नता के लिये सुन्दर वस्त्र आदि का दान करे। शनैश्चर अपमृत्यु का निवारण करने वाले हैं, उस दिन बुद्धिमान पुरुष रुद्र आदि की पूजा करे। तिल के होम से, दान से देवताओं को संतुष्ट करके ब्राह्मणों को तिलमिश्रित अन्न का भोजन कराये।

जो उपरोक्त तरह से देवताओं की पूजा करता है, वह सदा आरोग्य, सुख-समृद्धिशाली, दीर्घायु, यशस्वी होता है।

ननकाना साहिब गुरद्वारा

ननकाना साहिब सिखों के लिए उच्च ऐतिहासिक और धार्मिक मूल्य का एक शहर है और पूरी दुनिया के सिखों के लिए एक लोकप्रिय तीर्थ स्थल है। ननकाना साहिब, पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित एक शहर है। इसका वर्तमान नाम सिखों के पहले गुरू **नानक देव जी** के नाम पर पड़ा है। इसका पुराना नाम 'राय-भोई-दी-तलवंडी' था। यह लाहौर से 80 किमी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यहाँ का गुरुद्वारा साहिब दिव्य, भव्य और बहुत प्रसिद्ध है। महाराजा रणजीत सिंह ने गुरु नानकदेव के जन्म स्थान पर गुरुद्वारा का निर्माण कराया था।

गुरुग्रंथ साहिब के प्रकाश स्थान के चारों ओर लम्बी चौड़ी परिक्रमा है। गुरुग्रंथ साहिब को मत्था टेककर श्रद्धालु इसी परिक्रमा में बैठकर शबद-कीर्तन का आनन्द लेते हैं। परिक्रमा में गुरु नानकदेव जी से संबंधित कई सुन्दर पेंटिंग लगी हुई हैं। ननकाना साहिब में सुबह तीन बजे से ही श्रद्धालुओं का तांता लग जाता है। रंग-बिरंगी रोशनियों से जगमग करता ननकाना साहिब एक स्वर्गिक दृश्य प्रस्तुत करता है। पवित्र सरोवर में दर्शनार्थी स्नान कर पुण्य-लाभ करते हैं। रागी साहिबान द्वारा गुरुवाणी के शबद कीर्तन का प्रवाह रात तक चलता रहता है। हॉल में बैठकर श्रद्धालु लंगर छकते हैं। पहले पंगत फिर संगत की शानदार प्रथा ढेरों गुण समेटे हुए है।

पहले ननकाना साहिब को 'रायपुर' के नाम से भी जाना जाता था। उस समय राय बुलर भट्टी इस इलाके का शासक था और बाबा नानक के पिता उसके कर्मचारी थे। गुरु नानकदेव की आध्यात्मिक रुचियों को सबसे पहले उनकी बहन नानकी और राय बुलर भट्टी ने ही पहचाना। राय बुलर ने तलवंडी शहर के आसपास की 20 हजार एकड़ जमीन गुरु नानकदेव को उपहार में दी थी, जिसे 'ननकाना साहिब' कहा जाने लगा।

ननकाना साहिब के आसपास 'गुरुद्वारा जन्मस्थान' सहित नौ गुरुद्वारे हैं। ये सभी गुरु नानकदेव जी के जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं से संबंधित हैं। जिस स्थान पर नानकजी को पढ़ने के लिए पाठशाला भेजा गया, वहाँ आज पट्टी साहिब गुरुद्वारा शोभायमान है।

गुरुद्वारा ननकाना साहिब में गुरु नानक जी का जन्मदिन हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में वार्षिक उत्सव मनाकर बहुत बड़ा जुलूस निकाला जाता है और उत्सव किया जाता है।

2007 में पाकिस्तान सरकार ने ननकाना साहिब, गुरु नानक के जन्मस्थान पर सिख धर्म और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए एक योजना की घोषणा की। 'अंतरराष्ट्रीय गुरु नानक विश्वविद्यालय ननकाना साहिब' एक योजना बनाई गयी, जो सिख धर्म और संस्कृति पर बना सबसे अच्छा वास्तुकला, पाठ्यक्रम और अनुसंधान केंद्र है।

पृथ्वी खींचती है

राजस्थान के शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनानी के विचारों से वैज्ञानिक सहमत नहीं है। देवनानी के अनुसार, न्यूटन से 1000 वर्ष पहले ही भारतीय गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण (ग्रैविटी) की खोज कर ली थी। जहाँ वैज्ञानिकों का कहना है कि न्यूटन को इसलिए याद किया जाता है क्योंकि पहली बार उन्होंने ही थ्योरी दी थी। वहीं भारतीय संस्कृति से जुड़े लोगों के अनुसार, ब्रह्मगुप्त से भी पहले ऋग्वेद में गुरुत्वाकर्षण के बारे में बता दिया गया था और यह स्कूलों में पढ़ाया जाना चाहिए।

वैज्ञानिक और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स में पूर्व प्रोफेसर आर.सी. कपूर के अनुसार, ब्रह्मगुप्त ने दो किताबें लिखीं, खंडकाव्यक और ब्रह्मस्फुट सिद्धांत। इनमें ग्रहों की गति, ग्रहों की आकाश में संयुक्ति, उदय और अस्त होने को लेकर मुख्य रूप से अध्ययन है। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से यह कहा था कि पृथ्वी में खींचने की शक्ति होती है। वहीं गुरुत्वाकर्षण की बात भास्कराचार्य ने की थी। उनका 1014 से 1085 ई. का दौर था। उन्होंने 'सिद्धांत शिरोमणि' में एक श्लोक लिखा है, जिसके तीसरे अध्याय के छठे श्लोक में लिखा है कि 'पृथ्वी में आकर्षण बल है, इसी कारण सब गिरते प्रतीत होते हैं।'

अमेरिका की साइंस मैगजीन में असोसिएट एडिटर रहे डिक टेरेसी ने अपनी किताब 'एंसियंट रूट ऑफ मॉडर्न साइंसेस' के पेज नम्बर सात में लिखा है कि 'न्यूटन से 3400 वर्ष पहले हिंदुओं के ऋग्वेद में यह बताया गया कि पूरा ब्रह्मांड गुरुत्वाकर्षण शक्ति से आपस में जुड़ा है।' *(सौजन्य: नवभारत टाइम्स)*

हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालज्ञ थे

हमारे ऋषि-मुनियों को तीनों कालों का ज्ञान था। उनमें योग और ज्ञान की शक्ति तथा बुद्धि-बल था। अथर्ववेद, नारदपुराण, योगदर्शन, महाभारत आदि हमारे शास्त्रों में कला-कौशल की जो बातें आती हैं, वे वर्तमान युग में किसी भी मनुष्य में देखने में नहीं आतीं। पूर्वकाल में मनुष्यों में तप, योग तथा मंत्रों की अलौकिक शक्तियाँ और सिद्धियाँ प्रत्यक्ष थीं, उनके लिये शास्त्र प्रमाण हैं। ब्रह्मास्त्र, पाशुपतास्त्र, नारायणास्त्र, ऐन्द्रास्त्र, वारुणास्त्र आदि अस्त्रों की जो शक्तियाँ शास्त्रों में बतलाई गई हैं, वैसी शक्ति आज के परमाणु बम आदि किसी भी अस्त्र-शस्त्र में नहीं है। कुबेर के पुष्पक विमान, कर्दम मुनि के विमान, राजा शाल्व के सौभविमान और राजा उपरिचर वसु के विमान की ओर ध्यान दीजिये। कितने विचित्र थे वे। इसी प्रकार अनेक विचित्र विमानों का वर्णन शास्त्रों में पाया जाता है। ऐसे वायुयान वर्तमान में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होते। सिद्धियाँ भी जैसी उस समय कपिल, भरद्वाज आदि मुनियों में थीं, वैसी आज देखने में नहीं आतीं। श्रीहनुमान जी में भी कैसी विचित्र सिद्धियाँ थीं, वे इच्छानुसार छोटा और बड़ा रूप धारण कर लेते थे।

श्री वेदव्यास जी में कैसी अलौकिक शक्ति थीं कि उन्होंने मरी हुई अठारह अक्षौहिणी सेना को भी बुलाकर दिखा दिया तथा संजय को दिव्य दृष्टि प्रदान कर दी। इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों का कला-कौशल और ज्ञान आज की अपेक्षा बहुत ही उन्नत था। दर्शन-शास्त्रों के रचयिता ऋषि-मुनियों की बुद्धि की प्रखरता उनके ग्रंथों का अध्ययन करने से स्पष्ट प्रतीत होती है।

महर्षि पतञ्जलि ने शरीर की शुद्धि के लिये आयुर्वेद की, आत्मा की शुद्धि के लिये योगदर्शन की और वाणी की शुद्धि के लिये अष्टाध्यायी के महाभाष्य की रचना की। उनके जैसा विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ आज कोई भी नहीं रच सकता। उन ऋषि-मुनियों में तप, योगबल और मंत्र की अद्भुत सामर्थ्य थी। श्रीच्यवन ऋषि ने अपने तप से राजा शर्याति की सेना के मल-मूत्र बंद कर दिये और मंत्र के बल से इन्द्र के हाथ को भी स्तम्भित कर दिया तथा कृत्या को पैदा करके इन्द्र को परास्त कर दिया। उनके पास सेना या बम आदि कुछ नहीं था, किंतु उनमें तप और मंत्रों की अलौकिक शक्ति थी।

वर्तमान में जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक आविष्कार हुए हैं, यदि कुछ दिनों बाद ये नहीं रहें तो भविष्य में इनको भी लोग मिथ्या कह सकते हैं। इसी तरह प्राचीनकाल के ऋषियों ने जो बातें शास्त्रों में लिखी हैं, उनको पुरानी मानकर उनकी अवहेलना कर दें तो यह हम लोगों के लिये बहुत ही हानिकर है। भगवान की नीति, धर्म, कानून, मुक्ति के उपाय और जीवात्मा– ये परिवर्तनशील वस्तुएँ नहीं हैं। ये कभी पुरानी होती ही नहीं, सदा नवीन ही रहती हैं। इसलिये इनको पुरानी समझकर इनकी अवहेलना करना और नये-नये मत-मतान्तर की स्थापना करना बहुत भारी गलती है।

इस प्रकार शास्त्रों में ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, सिद्धि-शक्ति, अस्त्र-शस्त्र आदि की अनेक अलौकिक बातें पाई जाती हैं, किंतु जो शास्त्रों को नहीं पढ़ते, उन पर विश्वास नहीं करते, उनका तो उपाय ही क्या?

भगवान शंकर का ध्यान

वन्दे देव उमापतिं सुर गुरुं, वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनां पतिम्।।
वन्दे सर्यूशशाङ्कबह्निननयनं, वन्दे मुकुन्द प्रियम्।
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं, वन्दे शिवं शङ्करम्।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।३२।।

हे ईश! यदि काले पर्वत के समान स्याही हो, समुद्र की दावात हो, कल्पवृक्ष की शाखाओं की कलम बने, पृथ्वी कागज बने और इन साधनों से यदि सरस्वती सर्वदा आपके गुणों को लिखें, तब भी वे आपके गुणों का पार नहीं पा सकेंगी।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

जिनका शरीर कपूर की तरह श्वेत है, जो करुणा के अवतार हैं, जो शिव संसार के सार (मूल) हैं और जो महादेव सर्पराज को गले के हार के रूप में धारण करते हैं, ऐसे हमेशा प्रसन्न रहने वाले भगवान शिव को अपने हृदय कमल में शिव और पार्वती के साथ नमस्कार करता हूँ।

चाँद बावड़ी: विश्व की सबसे बड़ी बावड़ी

राजस्थान के दौसा जिले के आभानेरी गाँव, जो जयपुर-आगरा मार्ग पर स्थित एक छोटा कस्बा है। यह जगह रोमांचक बावड़ियों और हर्षत माता के मन्दिर के लिये प्रसिद्ध है। आभानेरी का शुरुआती नाम था 'आभा नगरी' अर्थात् चमकने वाला शहर। आभानेरी को राजा चाँद ने बसाया था। 'चाँद बावड़ी' और माता के मन्दिर की वजह से अब यह स्थान राजस्थान आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। प्राचीन काल में वास्तुविदों और नागरिकों द्वारा जल संरक्षण और वाटर हार्वेस्टिंग हेतु बनाई गई इस प्रकार की कई बावड़ियाँ इस क्षेत्र में मौजूद हैं जिनमें काफी पानी समाया रहता है जो क्षेत्र के निवासियों के वार्षिक उपयोग हेतु काम आता है। चाँद बावड़ी इन सभी बावड़ियों में सबसे बड़ी और लोकप्रिय है।

8वीं तथा 9वीं शताब्दी में निर्मित इस सुन्दर मन्दिर में आज भी उस प्राचीन काल की वास्तुकला और मूर्तिकला के दर्शन होते हैं। माना जाता है कि 'हर्षत' माता खुशी और आनन्द की देवी हैं जो भक्त को हमेशा खुश रखती हैं और समूचे गाँव को आनन्दमय बनाये रखती हैं। इसे अंधेरे-उजाले की बावड़ी भी कहा जाता है। चाँदनी रात में यह बावड़ी एकदम सफेद दिखायी देती है।

इसके ऊपरी भाग में निर्मित परवर्ती कालीन मंडप इस बावड़ी के लंबे समय तक उपयोग में रहने का प्रमाण देती है। बावड़ी की तह तक पहुँचने के लिए करीब 3500 सीढ़ियाँ बनाई गई हैं जो अद्‌भुत कला का उदाहरण पेश करती है। यह वर्गाकार बावड़ी चारों ओर स्तंभयुक्त बरामदों से घिरी हुई है, जिसमें नीचे तक जाने के लिए 13 सोपान बने हुए हैं। यह लगभग 100 फुट गहरी है।

भूलभुल्लैया के रूप में बनी इसकी सीढ़ियों के बारे में कहा जाता है कि कोई व्यक्ति जिस सीढ़ी से नीचे उतरता है, वह वापस कभी उसी सीढ़ी से ऊपर नहीं आ पाता है। बावड़ी की सबसे निचली मंजिल पर बनी गणेश एवं महिसासुर मर्दिनी की भव्य प्रतिमाएँ इसकी खूबसूरती में चार-चाँद लगा देती हैं।

इस बावड़ी में एक सुरंग भी है जिसकी लम्बाई लगभग 17 कि.मी. है जो पास ही स्थित गांव भांडारेज में निकलती है। युद्ध के समय राजा एवं उनके सैनिकों द्वारा इस सुरंग का इस्तेमाल किया जाता था। करीब पाँच साल पहले इसकी खुदाई एवं जीर्णोद्धार का कार्य कराया गया था। उसमें राजा चाँद का उल्लेख किया हुआ एक शिलालेख भी मिला था।

आभानेरी गाँव, राजस्थान के दौसा जिले में स्थित है। यह जयपुर से 95 कि.मी. दूर है। मेहंदीपुर बालाजी से यह स्थान मात्र 32 कि.मी. दूर है। अतः जब भी अवसर मिले, यहाँ अवश्य जाना चाहिये।

पिरामिड

पिरामिड के आकार को **'शिखर का कोण'** कहा जाता है। मंत्र और तंत्र की तरह यंत्र की भी अपनी विलक्षणता और प्रभाव होता है। यदि पिरामिड के आकार के कमरे या तम्बू में रोगी को लिटाया जाए तो लाभप्रद होता है।

पिरामिड के नीचे खान-पान का सामान एवं अंकुरित खाद्य-पदार्थ गुणयुक्त एवं स्वादयुक्त हो जाते हैं। बीज शीघ्रता से अंकुरित होते हैं। पिरामिड को सिर पर रखने से मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बुद्धि का विकास होता है। पिरामिड को हैट की तरह प्रतिदिन प्रातः-सायं आधा घंटे पहनने से सिरदर्द, साइनस, टेंशन, अनिद्रा आदि बीमारियाँ दूर होती हैं। सिर के साथ-साथ पिरामिड कुर्सी के नीचे रखने से अध्ययन में बहुत लाभ होता है। पलंग के नीचे पिरामिड रखने से नींद अच्छी आती है। जल की सुराही या मटके के ऊपर पिरामिड रखने से जल अधिक स्वादयुक्त और आरोग्यप्रद होता है। चार गिलास पानी पीकर पेट पर पिरामिड रखने से कब्ज में बहुत लाभ होता है। पेट पर रखने से पेट की गड़बड़ी दूर होती है। शरीर में दर्द के स्थान पर रखने से दर्द दूर हो जाता है।

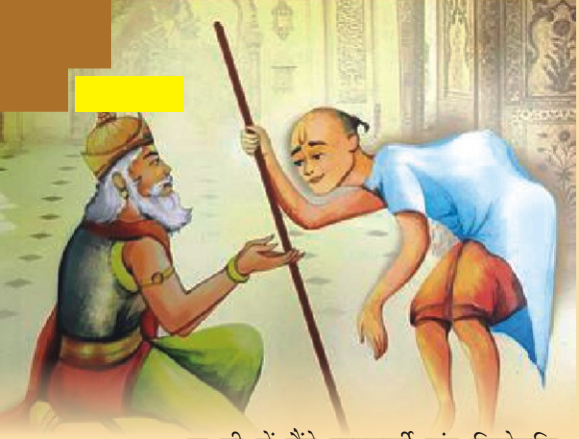

अष्टावक्र

बोधराज गैरे

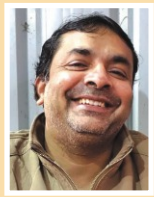

हाल ही में मैंने ज्ञानमार्गी संत शिरोमणि आदि शंकराचार्य जी पर एक पुस्तक लिखी है, जिसके प्रकाशक रामा पब्लिकेशन्स हैं। इसी दौरान मुझे ज्ञानमार्ग के अन्य ऋषियों-मनीषियों के बारे में भी पढ़ने की उत्कंठा हुई और इनमें से कुछ के बारे में सम्यक् पठन किया, हालांकि वे मेरी पुस्तक के विषय नहीं थे। इन मनीषियों में अष्टावक्र ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया। कम लोग जानते होंगे कि योगोश्वर श्रीकृष्ण की भगवत् गीता के अलावा एक और गीता भी है, जिसे 'अष्टावक्र गीता' कहा जाता है। श्रीकृष्ण की गीता योद्धा अर्जुन को संबोधित है, जबकि अष्टावक्र गीता विदेह राज जनक को संबोधित है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जनक स्वयं एक पहुँचे हुए ज्ञानी थे। नृप होकर भी विदेह थे, इसलिये अष्टावक्र का गुरु-ज्ञान उच्च कोटि का होना अनिवार्यता थी, जबकि श्रीकृष्ण को अपने भक्त अर्जुन को **गीतोपदेश** देना सहज था।

यहाँ मैं उस घटना विशेष का जिक्र करूँगा, जिसको लेकर जनक ने अपना यक्ष प्रश्न अष्टावक्र के समक्ष रखा और उत्तर में महाज्ञानी अष्टावक्र ने जो कहा, वो आध्यात्मिक सोच का निचोड़ कहा जा सकता है।

वास्तव में, राजा जनक एक दु:स्वप्न को लेकर परेशान थे और मानस-मंथन करने के बावजूद उनको (उस स्वप्न को लेकर) शंका का निवारण नहीं हो रहा था। सुबह होते ही विद्वानों की सभा बुलाई गई। विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से उत्तर दिए, पर जनक उनके उत्तर से संतुष्ट नहीं हो सके। सभा में निस्तब्धता छा गई। तभी सहसा उस सभा में एक 12 वर्षीय बालक ने प्रवेश किया। इस बालक का शरीर टेढ़ा-मेढ़ा यानि आठ स्थानों पर वक्र (कुबड़ापन) था। सभा में उपस्थित दरबारी एवं विद्वान सभी इस विचित्र देह वाले बालक को देखकर यकायक हँस पड़े। इस पर उस बालक ने कहा- 'राजन्! मैंने तो सुना था कि आपकी सभा में ज्ञानी, विद्वानों और पंडितों को स्थान प्राप्त है। लेकिन घोर आश्चर्य! आपकी सभा में तो चारों ओर चर्मकार (चमड़े का काम करने वाले) ही विराजते हैं।' उस बालक की ओजपूर्ण वाणी में गाम्भीर्य और निर्भयता थी, जिसे देख-सुनकर एक प्रकार की स्तब्धता छा गई। राजा का प्रश्न अभी भी मुँह बाये खड़ा था।

बालक ने कहा, 'मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ राजन्, सो बताता हूँ। चर्मकार की दृष्टि वस्तुत: चर्म पर होती है। वह उससे आगे की बात सोच भी नहीं सकता। इसी प्रकार देह के प्रति चर्ममयी दृष्टि रखने वाले, नाम-रूप को भेद कर उसके भीतर स्थित सत्-चित्-आनन्द स्वरूप को व्याख्यायित कैसे कर सकते हैं? राजन्, क्या आकाश एक घट से प्रतिबिम्बित होकर घट-सा हो जाता है या वही आकाश मठ की उपाधि पाकर मठाकाश बन जाता है। राजन्! मैंने आज जो कुछ यहाँ पर देखा, उससे मुझे लगा कि आप जिज्ञासु नहीं, बुद्धि का खिलवाड़ पसंद करते हैं। राजन्! यह भी एक व्यसन है। मेरी राय में आपकी शंकाओं का समाधान कोई तत्व-जिज्ञासु ही कर सकता है।'

इसके पश्चात् राजा की समस्याओं का निराकरण अष्टावक्र ने, उनकी अनुमति से, किस प्रकार किया, वह अपने आप में अध्यात्म का विस्तृत विवेचन है और अष्टावक्र गीता ही वो विवेचन है जोकि एक ऐसा ग्रंथ है, जिसका प्रत्येक सूत्र हमारे दिलो-दिमाग की ग्रंथियों को खोलने में सक्षम है।

सच्चा डॉक्टर

एक बार रसायन शास्त्री आचार्य नागार्जुन को एक महत्वपूर्ण रसायन तैयार करने के लिए सहायक की आवश्यकता थी। उन्होंने अपने परिचितों और कुछ शिष्यों को इस बारे में बताया। उन्होंने कई युवाओं को उनके पास भेजा। आचार्य ने सबकी परीक्षा लेने के बाद उनमें से दो युवकों को इसके लिए चुना। दोनों को एक रसायन बनाकर लाने का आदेश दिया। पहला युवक दो दिन बाद रसायन तैयार करके लाया। नागार्जुन अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने युवक से पूछा- तुमने बहुत जल्दी रसायन तैयार कर लिया। कुछ परेशानी तो नहीं आई? युवक बोला- आचार्य, परेशानी तो आई। मेरे माता-पिता बीमार थे, पर मैंने आपके आदेश को महत्व देते हुए मन को एकाग्र किया और रसायन तैयार कर लिया। आचार्य ने कोई जवाब नहीं दिया।

कुछ देर बाद दूसरा युवक बिना रसायन लिए खाली हाथ लौटा। वह बोला- आचार्य! क्षमा करें। मैं रसायन नहीं बना पाया, क्योंकि जैसे ही मैं यहाँ से गया, रास्ते में एक बूढ़ा आदमी मिल गया, जो पेट पीड़ा से कराह रहा था। मुझसे उसकी पीड़ा देखी नहीं गई। मैं उसे अपने घर ले गया और उसका इलाज किया। अब वह स्वस्थ है। अब आप आज्ञा दें तो मैं रसायन तैयार करके शीघ्र ही ले आऊँ।

नागार्जुन ने मुस्कुराते हुए कहा- वत्स, तुम्हें अब रसायन बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। कल से तुम मेरे साथ रहकर काम कर सकते हो। फिर वह पहले वाले युवक से बोले- बेटा, अभी तुम्हें अपने अंदर सुधार करने की आवश्यकता है। तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया, इससे मुझे प्रसन्नता हुई।

यह अच्छी बात तो है, पर यह मत भूलो कि सच्चा चिकित्सक वह है, जिसके भीतर मानवीयता भरी हो। उसके भीतर यह विवेक होना आवश्यक है कि वह पहले क्या करे। अगर किसी को तत्काल सेवा और उपचार चाहिए तो चिकित्सक को दूसरे सभी आवश्यक कार्य छोड़कर उसकी सेवा में लग जाना चाहिए।

भागवतमहापुराण की विलक्षण महिमा

सन् 1969 में भारत के सुप्रसिद्ध तीर्थ वाराणसी में गोवर्धनपीठ के शंकराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थ जी महाराज पधारे थे। उन्होंने श्रीमद्भागवतमहापुराण के सप्ताह की अद्भुत महिमा के सम्बन्ध की अपने स्वयं की जाँच की हुई एक महान् आश्चर्यजनक सत्य घटना सुनाई थी।

उत्कल देश के विख्यात कटक नगर में एक गुलाबराय मांडूमल नामक सुप्रसिद्ध फर्म है। लगभग तीन वर्ष हुए, उनकी एक विवाहिता पुत्री का शरीरान्त हो गया था और वह मरकर भूतयोनि को प्राप्त हो गई। उसकी एक चचेरी बहन थी, जो आयु में उससे बड़ी थी। भूतयोनि प्राप्त वह आत्मा अपनी उस चचेरी बहन को परेशान करने लगी। उसके बन्धु-बान्धवों ने इसे हिस्टीरिया की बीमारी समझकर अच्छे डॉक्टरों के द्वारा उसकी चिकित्सा करायी। चिकित्सा में हजारों रुपये खर्च किये; पर लाभ कुछ भी नहीं हुआ, बीमारी घटने के बजाय और भी ज्यादा बढ़ती चली गई।

जब घरवाले इलाज कराते-कराते थक गये तो एक दिन उस चचेरी बहन के शरीर में आकर परलोकगत छोटी बहन की आत्मा ने कहा- 'इसे बीमारी कुछ भी नहीं है। यह बहन मेरे कारण परेशान है और मैं स्वयं भी इस समय बड़ी परेशान हूँ। अपने किसी पूर्वजन्म के पापों के फलस्वरूप मैं इस समय पिशाच-योनि के दुःख भोग रही हूँ। जब तक मेरी इस पिशाच-योनि से मुक्ति नहीं होगी, तब तक मेरी इस बहन का लाख इलाज कराने पर भी रोग से छुटकारा नहीं होगा और इसे सुख-शांति नहीं मिलेगी।'

घरवालों के यह प्रश्न करने पर कि 'तुम्हारी इस पिशाच-योनि से मुक्ति होने का और तुम्हें शांति प्राप्त होने का साधन क्या है? वह हमें बताओ तो हम उसके अनुसार करें।' उत्तर में उसने कहा कि 'मेरी मुक्ति और मेरी सद्गति का एकमात्र उपाय है- 'श्रीमद्भावत-सप्ताह-श्रवण।' इसलिये आप विद्वान् ब्राह्मण को बुलाकर उनके द्वारा हमारे कल्याण के

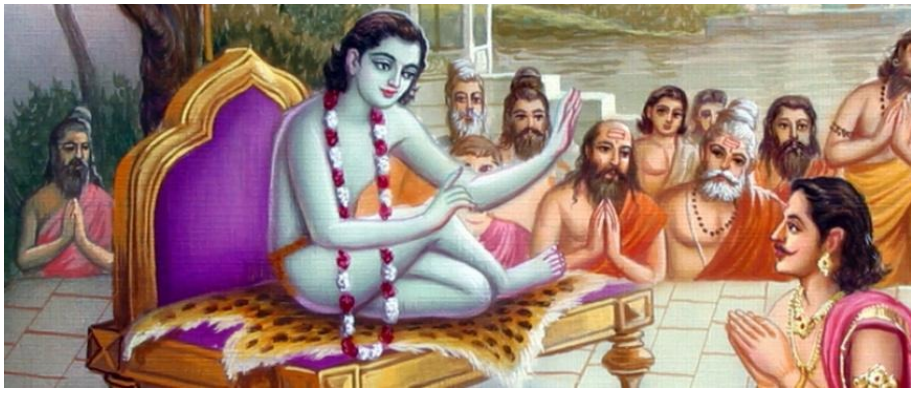

निमित्त श्रीमद्भागवत-सप्ताह- श्रवण का आयोजन करिये।'

उसके माता-पिता ने एक विद्वान् ब्राह्मण को बुलाकर उनके द्वारा श्रीमद्भागवत-सप्ताह प्रारम्भ करा दिया। किंतु घरवाले तथा कथावाचक पंडितजी महाराज वहाँ पर बाँस गाड़ना भूल गये, जो श्रीमद्भागवत-सप्ताह के शुभ अवसर पर एक बाँस गाड़ने की बहुत प्राचीन शास्त्रीय प्रथा है। कहा जाता है कि परलोकगत आत्मा उस पर बैठकर कथा सुनती है। उस परलोकगत आत्मा को यह बात बड़ी खटकी और उसने फिर अपनी उस चचेरी बहन के शरीर में प्रवेश करके कहा कि 'आपने श्रीमद्भागवत-सप्ताह-श्रवण कराना तो प्रारम्भ अवश्य करा दिया है, किंतु यहाँ पर मेरे बैठने के लिये श्रीमद्भागवत-सप्ताह के नियम के अनुसार बाँस नहीं गाड़ा, जिस पर बैठकर मैं श्रीमद्भागवत-सप्ताह का श्रवण करती। सबको पता है कि उस बाँस पर बैठकर प्राचीनकाल में धुन्धकारी नामक प्रेत ने गाय के पेट से पैदा हुए गोकर्ण नामक अपने भाई से श्रीमद्भागवत-सप्ताह सुनकर मुक्ति प्राप्त की थी।

उस परलोकगत आत्मा की इस शास्त्रीय बात को सुनकर वहाँ पर बाँस गाड़ा। किंतु बाँस के गाड़ने पर भी एक भूल यह रह गई कि बाँस के ऊपर जो कपड़ा लपेटा जाता है, वह कपड़ा लपेटना भूल गये। परलोकगत आत्मा ने पुनः अपनी चचेरी बहन के शरीर में आकर कहा- 'आपने इस बाँस पर कपड़ा नहीं लपेटा है, फिर भला इस नंगे बाँस पर मैं किस प्रकार बैठ सकती हूँ? इसलिये तुरंत उस बाँस पर कपड़ा लपेट दो, जिससे वह बाँस चुभे नहीं और मैं शांति से बैठकर श्रीमद्भागवत का सप्ताह श्रवण कर सकूँ?' तब घरवालों ने तुरंत उस नंगे बाँस पर कपड़ा लपेटा और अपनी गलती स्वीकार की तथा उस आत्मा से इस भूल के लिये क्षमा माँगी।

इस बात की चर्चा अड़ोस-पड़ोस और टोले-मोहल्ले में सर्वत्र फैल गई। सभी लोग सुनकर बड़े आश्चर्यचकित रह गये। अब तो श्रीमद्भावत-सप्ताह-श्रवण करने के लिये हजारों मनुष्यों की भीड़ कथा में आने लगी और इस महान् आश्चर्यजनक सत्य घटना से पुनर्जन्म, पुराण, वेदशास्त्र और उनके द्वारा बताये गये उपायों पर लोगों का विश्वास बढ़ता गया।

यह है श्रीमद्भागवत महापुराण की अद्भुत महिमा, जिससे सुनने मात्र से परलोकगत आत्मा को पिशाच-योनि से तत्काल छुटकारा मिल गया, उसकी सद्गति हो गई। जो ऐसे परम कल्याणकारी पुराणों की निंदा करते हैं, वे अपना और अपनी संतान का तथा अपनी हिंदूजाति एवं देश का कितना अहित कर रहे हैं, यह विचारणीय है। इस सत्य घटना से सिद्ध हो जाता है कि हमारे शास्त्र-पुराणों की सभी बातें अक्षरशः बिल्कुल सत्य हैं। आशा है पाठक अपने सत्य सनातन धर्म के प्राण इन पुराणों की अद्भुत महत्ता को समझेंगे और इन पुराणों के बताये अनुसार चलकर सनातन धर्म की शरण में रहकर अपना और अपने देश-जाति का परम कल्याण करेंगे।

शनि दीपदान विधि

- समय: संध्या के समय (दोपहर 3 बजे से सायं 6 बजे के बीच) व इच्छानुसार
- भगवान शनि के नाम से आपको 1, 5, 11 एवं श्रद्धानुसार दीपक जलाने की जरूरत है। (घी/सरसों का तेल/तिल का तेल)
- आपको दिया जलाने के साथ हाथ में जल लेकर ये संकल्प लेना है कि 'हे शनिदेव महाराज! मैं ये दीपदान मनु भैया को साक्षी मानकर आपको अर्पित करता/करती हूँ। नाथ आप इसे स्वीकार करें और मेरे पितृ व मलिन प्रेत को मुक्ति व शांति दें एवं रोगों का निवारण करें।' या आपकी जो प्रार्थना है, उसके अनुकूल ये संकल्प करें, जैसे: सुपुत्र व सुपुत्री के शीघ्रविवाह हेतु अथवा व्यापार बंधन एवं व्यापार वृद्धि हेतु दीपदान करता हूँ, आप इसे ग्रहण करें।
- ज्योत जलाने के 30 मिनट उपरांत आपको ज्योत के तेल को चम्मच से निकालकर थोड़ा हाथ में लेकर चखना है एवं दर्द की जगह पर लगाना है। इस तरह आप 1000 दीपदान करें।
- जिसको त्वचा संबंधी एलर्जी रहती हो, वह ये दीपदान जरूर करें।

मंत्र-चिकित्सा, विज्ञान एवं अध्ययन संस्थान
शनि धाम मनु भैया जी ट्रस्ट

श्रेष्ठ भारत फाउंडेशन
SHRESHTHA BHARAT FOUNDATION
www.sbfindia.co.in
Trust Regd. No. : 1937/2015

- SBF STUDY CENTER
- FREE HEALTH CHECKUP CAMP
- BLOOD DONATION CAMP
- CANCER AWARENESS PROGRAME
- SWAPCHHTA ABHIYAN
- TREE PLANTATION
- FLOOD RELIEF CAMP
- CULTURAL ACTIVITIES
- SOCIAL ACTIVITES
- SPORTS ACTIVITY
- RUN FOR CHARITY ON WORLD AIDS DAY
- IMPECUNIOUS
- BLANKET / CLOTH DONATE
- PUBLIC AWARENESS PROGRAME WITH NUKKAD NATAK

A-24, Shyam Vihar Phase II, Street No. 14, Near Mata Mandir, Najafgarh, New Delhi-110043
E-mail : info@sbfindia.co.in Website : www.sbfindia.co.in
Contact : 9810902928, 9999229517, 9811924564, 8800702507, 9643133994, 9711199016

एक कदम श्रेष्ठ भारत की ओर

वन संस्कृति और भारत

रामानन्द

वन संस्कृति से भारत पल्लवित, पोषित और फलित होता रहा है। हमारे ऋषि-मुनि, मनीषियों ने जंगल में नदी किनारे श्रुति-स्मृति चिन्तन कर उपनिषद्, पुराणादि ग्रंथों की रचना की। वन में वृक्ष के मूल में बैठकर ऋषियों ने अपनी साधना, तपोबल से अर्जित विद्याओं के द्वारा विश्व को अमूल्य निधि प्रदान की। विश्व के प्राय: जितने भी प्रमुख धर्म के आचार्य हुए हैं, सबने वन संस्कृति से शिक्षा, चेतना ग्रहण की। भगवान बुद्ध सत्यान्वेषण हेतु प्राय: सभी विद्याओं का प्रयोग किया लेकिन सफलता नहीं मिली, अन्तत: बोधिवृक्ष के नीचे उन्हें आत्मज्ञान मिला।

भारतीय संस्कृति और सत्य सनातन धर्म में मानव कल्याण के बहुमुखी विकास हेतु वन संस्कृति को ही आदर्श माना है। वानप्रस्थ के बाद संन्यासाश्रम को वन में ही नियत स्थान दिया गया है। मानव कल्याण हेतु ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र में ग्रहशान्ति व नक्षत्र शान्ति के लिए वृक्ष को ही अंतिम उपाय माना गया है। हमारे जितने भी देवी-देवता हैं, सबके नियत अपने-अपने प्रिय वृक्ष-पौधे हैं। उन पौधों-वृक्षों की सेवा से ग्रह, नक्षत्रादि के दोष प्रशमन हो जाते हैं।

'तुलसी' को भगवान विष्णु की अर्धांगिनी माना गया है। वस्तुत: तुलसी पौधा केवल आध्यात्मिक ही नहीं, भौतिक रूप से भी सर्वाधिक कल्याणप्रद है। इसलिये प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में तुलसी लगाने का शास्त्रों में आदेश दिया है।

आयुर्वेद के सर्वसम्मानित आचार्य चरक ने अपनी चरक संहिता में 'आयुर्वेद चिकित्सा' का विधान दिया है, जो पौधों से ही तैयार किया जाता है। हमारे शास्त्रों के अनुसार, कोई भी ऐसा पौधा नहीं है, जिसमें मानव जीवन के कल्याण की शक्ति नहीं है। अतएव वन संस्कृति, भारतीय संस्कृति है। इससे ही सृष्टि का कल्याण संभव है। भारत कृषि प्रधान देश है। आदिकाल में कृषि की खोज भारत ने ही की थी।

हमारे शास्त्रों में गीता, गंगा और गाय– तीन मानव के कल्याण के लिए सेवनीय हैं। तीनों का सम्बन्ध मुख्यत: कृषि से है। कृषितंत्र के लिए 'वन' की रक्षा, सृजन अनिवार्य है।

मॉरीशस में हिन्दू संस्कार

अंग्रेज शासक भारतीयों को व्यक्ति नहीं, वस्तु समझा करते थे और मनमाने ढंग से उनका उपयोग करते थे। उन्हीं दिनों अंग्रेजों की दृष्टि में हिन्द महासागर में स्थित मेडागास्कर से पाँच सौ मील पूर्व में एक द्वीप आया, जो उन्हें गन्ने की खेती के लिये उपयुक्त लगा। फिर क्या था, अंग्रेजों ने सात सौ भारतीय मजदूरों को भेड़-बकरियों की तरह समुद्री जहाज में भरकर अपने घर-परिवार और देश से दूर उस टापू में भेज दिया। यद्यपि ये मजदूर प्राय: अशिक्षित ही थे, परंतु इनमें हिन्दुत्व और भारतीयता के संस्कार कूट-कूटकर भरे थे। इन मजदूरों को वहाँ क्रिश्चन बनने के लिये विविध प्रकार के प्रलोभन और प्रताड़नाएँ दी गईं, परंतु इन धर्मवीरों ने अपने संस्कार नहीं छोड़े।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, समय ने करवट बदली और मॉरीशस नामक यह टापू आजाद हुआ। आज यहाँ की 70 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है तथा इन लोगों ने अपने संस्कारों को जीवित रखने के लिए वहाँ प्रतीक रूप में काशी, गोकुल और ब्रह्मस्थान आदि तीर्थस्थान बसा रखे हैं। मॉरीशस के प्रत्येक गाँव में भगवान् शंकर के मंदिर हैं, जहाँ सायंकाल प्राय: ढोलक-मँजीरे के साथ भजन-कीर्तन होता है। सप्ताह में एक बार तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस का पाठ अवश्य ही होता है। तुलसीदास जी का रामचरितमानस उनके जीवन का आधार है और सुन्दरकाण्ड का पाठ उन्हें आत्मविश्वास के साथ जीवन को जीने के लिये निरन्तर प्रेरित करता है, इसलिये मॉरिशस में सुन्दरकाण्ड बहुत ही लोकप्रिय है

और प्रत्येक के हृदय में बसा है। यहाँ गंगाजी नहीं हैं, अत: यहाँ के हिन्दू शिवरात्रि को 'परी तालाब' नामक पवित्र सरोवर में स्नान करते हैं और उसी सरोवर का जल भगवान शंकर पर चढ़ाते हैं। उस दिन समस्त हिन्दू श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।

इस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी मॉरीशसवासियों ने हिन्दू संस्कार और भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखा।

यज्ञः सृष्टि का संरक्षक

आ. पं. रामकृष्ण झा (सुलभ पञ्चांगकार)

भारतीय संस्कृति में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाले संस्कारों में यज्ञ की उपस्थिति किसी न किसी रूप में अवश्य रहती है। 'पद्मपुराण' के अनुसार यज्ञ से वृष्टि, वृष्टि से अन्नोत्पादन और अन्न से मनुष्य का संपोषण होता है। अतः यज्ञ कल्याणकारी कर्म है।

यज्ञ वैदिक समाज एवं वैदिक संस्कृति की देन है। वेदों का मुख्य विषय यज्ञ में अग्नि संस्कार, अग्नि होम तथा हवन है, जो पर्यावरण प्रदूषण निवारक तथा सृष्टि का रक्षक है। यज्ञ की प्रक्रिया, इसके विविध स्वरूप आदि का निरूपण चारों वेदों में मिलता है।

ऋग्वेद तथा सामवेद में यज्ञ को देवताओं की प्रसन्नता का स्रोत माना गया है। अथर्ववेद यज्ञ में अनुशासन निर्दिष्ट करता है तो यजुर्वेद यज्ञ का मापन। वैदिक संहिताओं में यज्ञ को सृष्टि का मूल, समस्त भुवन का केन्द्र माना गया है तथा सम्पूर्ण विश्व को यज्ञमय कहा गया है।

भारतीय संस्कृति में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाले संस्कारों में यज्ञ की उपस्थिति किसी न किसी रूप में अवश्य रहती है। 'पद्मपुराण' के अनुसार यज्ञ से वृष्टि, वृष्टि से अन्नोत्पादन और अन्न से मनुष्य का संपोषण होता है। अतः यज्ञ कल्याणकारी कर्म है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने खतरों को भाँपकर ही यज्ञ की परम्परा को प्रचलित किया तथा हवन के लिए ज्यामितीय आकार पर निर्मित यज्ञ हवनकुण्ड में प्रज्ज्वलित अग्नि में औषधीय गुणों वाली सामग्रियों, समिधाओं को मंत्रोच्चार सहित भस्म करने की अनिवार्यता बताई। यजुर्वेद में 'कुण्डविधान' सर्वाधिक महत्वपूर्ण यज्ञांग है। उल्लेखनीय है कि वेदों में विभिन्न यज्ञ प्रकृति के पंचतत्व (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा) के पूरक हैं। पिरामिड की ज्यामितीय आकृति में निर्मित यज्ञ हवनकुण्ड की अपना महत्ता है, क्योंकि यह अग्नि की ऊर्जा को अंतरिक्ष में प्रसारित कर सम्पूर्ण प्रकृति को शक्तिशाली बनाता है।

हवन सामग्रियों में चंदन, इलायची, तुलसी, कस्तूरी, केसर, जावित्री, गुग्गल, कर्पूर, दालचीनी, मधु, शर्करा, गुड़, किशमिश आदि शक्तिवर्द्धक सामग्री सूखे मेवे, कृमिनाशक औषधियाँ, गिलोय, जायफल आदि महत्वपूर्ण समिधा- आम, गूलर, नीम, अशोक, अश्वत्थ, चन्दन, देवदार आदि से उत्पन्न ज्वाला वायुमंडलीय वातावरण में पहुँचकर संपूर्ण परिवेश की परिशुद्धि करती है और विषाणुयुक्त जीवाणुओं को नष्ट करती है।

यज्ञाग्नि से आकाश में पहुँचने वाला वाष्प, शुष्क घनीभूत कण आपस में संयुक्त हो बादल का निर्माण कर वृष्टि रूप में धरती के अन्न में पोषणीय तथा औषधीय गुण भर देते हैं। ध्यातव्य है कि यज्ञाग्नि से कार्बनडाईऑक्साईड गैस के साथ फॉर्मेलडेहाईड गैस भी औषधीय सामग्री जलने से उत्सर्जित होती है, जो अपने अपरिवर्तित रूप में ग्रुप के साथ वातावरण में प्रविष्ट होकर काफी अंश तक कार्बनडाईऑक्साईड गैस को अपने रूप-गुण में परिवर्तित कर देती है।

इस प्रसंग में 19वीं सदी के नवें दशक में अमेरिकी वैज्ञानिकों यथा- लाए एवं फिशर ने अनुसंधानों के आधार पर यह सिद्ध किया कि फॉर्मेलडेहाईड गैस एक अत्यन्त शक्तिशाली जीवाणुनाशी गैस है जो बैक्टीरिया का संहार करती है तथा कोमल मृदु जैवीय उत्पादों को अपकर्ष से संरक्षित करती है। यज्ञ सृष्टि की सेवा है। भगवान कृष्ण ने गीता में यज्ञ को सृष्टि का संरक्षक माना है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

तत्कालीन भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष दीनदयाल जी ने केवल एक बार चुनाव लड़ा, उनका निर्वाचन क्षेत्र जौनपुर ब्राह्मण बहुल क्षेत्र था। जातिगत आधार पर प्रस्तावित एक बैठक में उनसे बोलने के लिये कहा गया, जिस पर उन्होंने साफ मना करते हुए कहा कि इससे भले ही दीनदयाल जीत जाये, लेकिन जनसंघ हार जायेगा। यह हमारे ध्येय के विरुद्ध है। स्पष्ट ध्येयमार्ग पर चलकर कड़ी मेहनत और कठिन तपस्या से उन्होंने जनसंघ को 1967 में उत्तर प्रदेश की सत्ता का भागीदार बना दिया। संविद सरकार में जनसंघ एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

मृत्यु से पूर्व 11 फरवरी 1968 तक लगातार उन्होंने चरैवेति चरैवति का संदेश अपनी कर्मठता से दिया। सादगी की पराकाष्ठा तब समझ में आयी, जब मृत्यु के बाद निजी सम्पदा के नाम पर कुछ जोड़ी कुर्ता-धोती और कुछ पुस्तकें ही मिल सकीं। 'इदं राष्ट्रीय इदं न मम्' कहकर वे चल दिये। एकात्म मानव दर्शन दुनिया में तीसरा प्रमुख मार्ग बन गया, क्योंकि दीनदयाल जी ने राष्ट्रवादी विचारधारा के कार्यकर्त्ताओं का 'मास्टर माइन्ड ग्रुप' बनाया तथा लंदन में उन्होंने भारतीय मित्रों के बीच लंदन जनसंघ फोरम बनाकर प्रवासी भारतीयों को भी अपनी मातृभूमि के प्रति जाग्रत रखने का प्रयास किया। धन्य हैं पं. दीनदयाल जी का जीवन दर्शन, जिनके बताये मार्ग पर चलकर ही भारत का चरमोत्कर्ष विकास सम्भव है।

श्रद्धा के फूल

कुमारी प्रतिभा

एक बार किसी गाँव में महात्मा बुद्ध का आगमन हुआ। सभी गाँववासी महात्मा जी को कुछ-न-कुछ भेंट लेकर दर्शन करने जा रहे थे। उसी गाँव में एक गरीब मोची रहता था। उसके घर के सामने एक तालाब था, उसमें एक बेमौसम का कमल का फूल खिला हुआ था। मोची तालाब में अन्दर जाकर वह फूल तोड़ लाया। केले के पत्ते का डोना बनाकर उसने फूल उसमें रख लिया। जिस रास्ते से लोग महात्मा बुद्ध के दर्शन करने जा रहे थे, उसी रास्ते पर वह उस फूल को लेकर खड़ा हो गया।

तभी एक व्यक्ति ने उस फूल को देखा और मोची से दो रुपये में बेचने के लिये कहा। थोड़ी देर में नगर सेठ उस स्थान पर आया और सुन्दर फूल को देखकर 10 चाँदी के सिक्के देने का प्रस्ताव किया। परन्तु मोची ने वह फूल उसे नहीं बेचा। कुछ देर पश्चात् वहाँ के राज्य का मंत्री भी आया, उसका मन भी वह फूल देखकर खरीदने को करने लगा, मंत्री ने 100 चाँदी के सिक्के में वह फूल खरीदना चाहा। यह चर्चा हो ही रही थी कि उस राज्य का राजा भी महात्मा जी के दर्शन के लिये वहाँ आ गया। उसने वजीर से पूछा, इतनी भीड़ क्यों है, पता लगाओ। वजीर ने पता लगाकर बताया कि राजन्, एक कमल पुष्प की सौदेबाजी चल रही है। यह सुनते ही राजा ने कहा, इस व्यक्ति को हमारी ओर से एक हजार चाँदी के सिक्के भेंट करना, यह फूल हम ही लेना चाहते हैं।

गरीब मोची ने कहा, लोगे तो जब, जब मैं इसे बेचना चाहूँगा। हम फूल बेचेंगे ही नहीं। अब राजा ने पूछा- बेचोगे क्यों नहीं? मोची ने कहा- राजन्, जब सभी कुछ-न-कुछ महात्मा जी को भेंट करना चाहते हैं, तो यह फूल मुझ गरीब की ओर से ही महात्मा जी के चरणों में भेंट होगा। राजा बोला- 'देख लो, एक हजार चाँदी के सिक्कों से तुम्हारी पीढ़ियाँ तर जायेंगी। तुम गरीब हो, इतना धन तुम कई जन्मों में भी नहीं कमा सकते।' मोची ने कहा- 'महाराज! मैंने तो आज तक

राजा की सम्पत्ति से किसी की पीढ़ियाँ तरते नहीं देखीं, किंतु महापुरुषों के आशीर्वाद से लोगों को तरते देखा है।' राजा मुस्कुराया और बोला- तेरी बात में दम है। तेरी मर्जी, तू ही भेंट कर दे।

जल्दी ही इस फूल की चर्चा महात्मा जी के कानों तक पहुँच गई कि आज कोई व्यक्ति एक फूल लेकर आ रहा है, जिसकी बहुत कीमत लगी है। वह गरीब आदमी है, फूल बेचने निकला था ताकि उस की गुजर हो सके। जैसे ही वह गरीब मोची फूल लेकर पहुँचा, तो शिष्यों ने महात्मा जी से कहा कि वह व्यक्ति आ गया है। महात्मा बुद्ध ने उसकी ओर देखा। मोची जैसे ही फूल लेकर पहुँचा, उसकी आँखों से आँसू बरसने लगे। कुछ बूँदें तो पानी की पहले ही कमल पर थी, कुछ बूँदे उसके आँसुओं की आ गईं कमल पर। रोते हुए उसने कहा- सबने कीमती-कीमती चीजें आपके चरणों में भेंट की होंगी, लेकिन इस गरीब के पास यह कमल का फूल ही है। जन्म-जन्मान्तरों के जो पाप मैंने किये हैं, उनके आँसू आँखों में भरे पड़े हैं। उनको आज आपके चरणों में चढ़ाने आया हूँ। मेरा यह फूल व मेरे आँसू भी स्वीकार करें। उसने महात्मा के चरणों में वह फूल रख दिया और घुटनों के बल उनके सामने बैठ गया। महात्मा बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनन्द को बुलाया और कहा, 'देख रहे हो आनन्द! हजारों वर्षों में भी कोई राजा इतना नहीं कमा पाया, जितना इस गरीब इंसान ने आज एक पल में कमा लिया है। इसका पुण्य श्रेष्ठ हो गया।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः

किसी की मृत्यु होने पर स्वाभाविक ही हमें शोक होता है, पर वास्तव में तो मृत्यु शोक का नहीं बल्कि विचार का समय है। इस सम्बन्ध में कृशगौतमी नामक एक स्त्री की मार्मिक कथा इस प्रकार है-

अपने नवजात प्रथम शिशु की मृत्यु होने पर शोक से व्याकुल होकर कृशगौतमी मृत शिशु के शरीर को लेकर सड़कों पर घूमने लगी कि कोई तो उसे ऐसी दवा दे दे ताकि उसका बच्चा फिर से जी उठे। लोगों ने सोचा कि यह तो पागल हो गई है। एक दयालु और समझदार व्यक्ति उसे भगवान् बुद्ध के पास ले गया। बुद्ध ने कृशगौतमी से कहा- 'तुम किसी ऐसे घर से, जहाँ परिवार में किसी की भी कभी मृत्यु नहीं हुई हो, सरसों के कुछ दाने लेकर आ जाओ तो मैं तुम्हारे बच्चे को जीवित कर दूँगा।' बुद्ध का यह वचन सुनकर कृशगौतमी के मन में आशा बँधी और वह वहाँ के घर-घर में प्रत्येक परिवार के पास गई, पर सबने यही कहा कि हमारे यहाँ तो अनेक मृत्यु हो चुकी हैं। किसी के पिता की तो, किसी की माता की या भाई की या बहन की या पुत्र या पुत्री की मृत्यु हो चुकी थी। एक भी परिवार उसे ऐसा नहीं मिला, जहाँ कभी कोई भी मरा नहीं हो। धीरे-धीरे जो बात बुद्ध उसे समझाना चाहते थे, वह उसको अपने-आप समझ में आ गई कि मृत्यु तो सभी की होती ही है। वह बुद्ध के पास लौट आई और बोली- 'भगवन्! मेरे शोक ने मुझे अंधा बना दिया था।' अब मृत्यु के सम्बन्ध में बुद्ध का उपदेश सुनने लायक उसकी मनःस्थिति हो गई थी।

बुद्ध ने कहा- 'इस संसार में जो भी उत्पन्न हुआ है या बाद में उत्पन्न होगा, निश्चित रूप से उसकी अवश्य एक दिन मृत्यु भी होगी। सारे संसार में यह एक ही नियम लागू है कि यहाँ हर शरीर मरणशील है- उसका अस्तित्व सदा नहीं रहता।'

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने यही बात कही है कि **'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः'**, जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है।

भक्त शिरोमणी नरसी मेहता

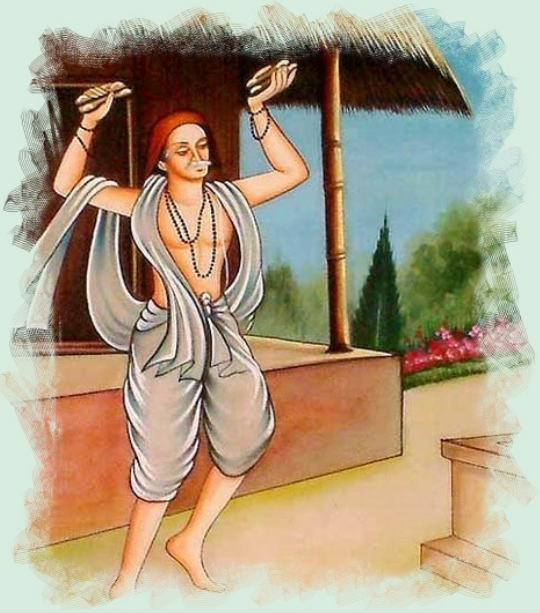

एक बार नरसी जी का बड़ा भाई वंशीधर नरसी जी के घर आया। पिता जी का वार्षिक श्राद्ध करना था। वंशीधर ने नरसी जी से कहा- 'कल पिताजी का वार्षिक श्राद्ध करना है। कहीं भजन गाने मत बैठ जाना, बहू को लेकर मेरे यहाँ आ जाना। काम-काज में हाथ बटाओगे तो तुम्हारी भाभी को आराम मिलेगा।' नरसी जी ने कहा- 'पूजा पाठ करके ही आ सकूँगा।'

इतना सुनना था कि वंशीधर उखड़ गए और बोले- 'जिन्दगी भर यही सब करते रहना। जिसकी गृहस्थी भिक्षा से चलती है, उसकी सहायता की मुझे जरूरत नहीं है। तुम पिताजी का श्राद्ध अपने घर पर अपने हिसाब से कर लेना।' नरसी जी ने कहा- 'नाराज क्यों होते हो भैया? मेरे पास जो कुछ भी है, मैं उसी से श्राद्ध कर लूँगा।'

दोनों भाईयों के बीच श्राद्ध को लेकर झगड़ा हो गया है, नागर-मंडली को मालूम हो गया। नरसी अलग से श्राद्ध करेगा, ये सुनकर नागर मंडली ने बदला लेने की सोची।

पुरोहित प्रसन्न राय ने सात सौ ब्राह्मणों को नरसी के यहाँ आयोजित श्राद्ध में आने के लिए आमंत्रित कर दिया। प्रसन्न राय जानते थे कि नरसी का परिवार माँगकर भोजन करता है। वह सात सौ ब्राह्मणों को भोजन नहीं करा पाएगा? आमंत्रित ब्राह्मण नाराज होकर जायेंगे और तब उसे ज्यातिच्युत कर दिया जाएगा।

अब कहीं से इस षड्यंत्र का पता नरसी मेहता जी की पत्नी मानिकबाई जी को लग गया, वह चिंतित हो उठी। अब दूसरे दिन नरसी जी स्नान के बाद श्राद्ध के लिए घी लेने बाजार गए। नरसी जी घी उधार में चाहते थे, पर किसी ने उनको घी नहीं दिया। अंत में एक दुकानदार राजी हो गया, पर ये शर्त रख दी कि नरसी को भजन सुनाना पड़ेगा। बस फिर क्या था, मनपसंद काम और उसके बदले घी मिलेगा, ये तो आनंद हो गया। नरसी जी भगवान का भजन सुनाने में इतने तल्लीन हो गए कि ध्यान ही नहीं रहा कि घर में श्राद्ध है।

अब नरसी मेहता जी भजन गाते गए और उधर नरसी के रूप में भगवान कृष्ण श्राद्ध कराते रहे। सात सौ ब्राह्मणों ने छककर भोजन किया। दक्षिणा में एक-एक अशर्फी भी प्राप्त की। सात सौ ब्राह्मण आये तो थे नरसी जी का अपमान करने और कहाँ बदले में सुस्वादु भोजन और अशर्फी दक्षिणा के रूप में देकर गये। दुष्टमति ब्राह्मण सोचते रहे कि ये नरसी जरूर जादू-टोना जानता है।

इधर दिन ढले घी लेकर नरसी जी जब घर आये तो देखा कि मानिक बाई जी भोजन कर रही हैं। नरसी जी को इस बात का क्षोभ हुआ कि श्राद्ध क्रिया आरम्भ नहीं हुई और पत्नी भोजन करने बैठ गयी। नरसी जी बोले- 'वो आने में जरा देर हो गयी। क्या करता, कोई उधार का घी भी नहीं दे रहा था, मगर तुम श्राद्ध के पहले ही भोजन क्यों कर रही हो?'

मानिक बाई जी ने कहा- 'तुम्हारा दिमाग तो ठीक है? स्वयं खड़े होकर तुमने श्राद्ध का सारा कार्य किया। ब्राह्मणों को भोजन करवाया, दक्षिणा दी। सब विदा हो गए, तुम भी खाना खा लो।' ये बात सुनते ही नरसी जी समझ गए कि उनके इष्ट स्वयं उनका मान रख गए।

गरीब के मान को, भक्त की लाज को परमप्रेमी करूणामय भगवान् ने बचा लिया।

भक्त के मन में अगर सचमुच समर्पण का भाव हो तो भगवान स्वयं ही उपस्थित हो जाते हैं।

कीर्तन की महिमा

प्यारा सिंह बरार

कीर्तन जोर-जोर से होता है और इसमें संख्या का कोई हिसाब नहीं रखा जाता। जप जितना गुप्त होता है उतना ही उसका अधिक महत्व है, परन्तु कीर्तन जितना ही गगनभेदी स्वर में होता है उतना ही उसका महत्व बढ़ता है। कीर्तन के कई प्रकार हैं- अकेले ही भगवान के किसी नाम को आर्तभाव से पुकार उठना, जैसे- द्रोपदी और गजराज आदि ने भगवान को पुकारा था; भगवान के किसी चरित्र या कथाभाग का गान करना और बीच-बीच में नाम कीर्तन करना; अधिक लोगों का एक साथ मिलकर एक स्वर से नामकीर्तन करना।

जब मनुष्य किसी दु:ख से घबराकर भगवान से आश्रय-याचना करता हुआ जोर से उसका नाम लेकर पुकारता हैं, तब भगवान उसी समय भक्त की इच्छा के अनुकूल कार्य कर उसका दु:ख दूर करते हैं। जब सबकी आशा छोड़कर केवल परमात्मा पर भरोसा कर उसे मन से कोई पुकारता है, तब वह करूणासिंधु भगवान एक क्षण भी निश्चिंत और स्थिर नहीं रह सकता। उसे भक्त के लिए उसी समय दौड़ना पड़ता ही है। नाम की पुकार होते ही द्रौपदी के वस्त्रों में भगवान का चीरावतार हो गया। दस हजार हाथियों का बल रखने वाली दु:शासन की भुजाएँ फटने लगीं। 'दस हजार गज बल घटयो, घटयो न दस गज चीर।'

विश्व प्रसिद्ध
अनुपम सांस्कृतिक महोत्सव
'पुरी रथयात्रा'

स्कन्दपुराण में स्पष्ट कहा गया है कि जो श्रद्धालु जगन्नाथ रथयात्रा में श्री जगन्नाथ जी के नाम का कीर्तन करता हुआ गुंडिचा नगर (मंदिर) तक जाता है, वह पुनर्जन्म के बन्धन से मुक्त हो जाता है। यह भी मान्यता है कि श्री जगन्नाथ भगवान नित्य भोजन करने पुरी आया करते हैं और विश्राम द्वारिका में करते हैं।

रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को निकलती है। ऋग्वेद में भी इसके समय तथा महात्म्य का वर्णन मिलता है। इस अवसर पर तीन रथ सजाए जाते हैं- भगवान जगन्नाथ, बलराम जी तथा सुभद्रा जी, जिसे 'नंदीघोष', 'दर्पदलन' तथा 'तालध्वज' कहा जाता है। तीनों रथों के आवरण अलग-अलग रंगों के होते हैं। भगवान जगन्नाथ जी के रथ का आवरण 'रक्तपीत', सुभद्रा जी के रथ का 'कृष्ण-लोहित' तथा बलभद्र जी के रथ का 'रक्त-हरित' होता है।

प्रातः पूजा-अर्चना के बाद भगवान को रथ पर आरूढ़ किया जाता है। तीनों के रथ में रथारूढ़ होने पर परम्परागत रूप से पुरी के गजपति महाराज आकर रथ पर सोने की झाड़ू से बुहारी करते हैं, जिसे 'छेरा पहरा' कहते हैं। उसके बाद पुरी के शंकराचार्य रथों की परिक्रमा कर रथ खींचने की आज्ञा देते हैं। तीनों रथों को खींचने के लिये नारियल के मोटे-मोटे रस्से बाँधे जाते हैं। तीनों रथों को श्रद्धालु खींचते हैं, जिसमें देश ही नहीं, विश्व के कृष्णभक्तों की अपार भीड़ उमड़ पड़ती है। ओड़िशा का कोई गाँव ऐसा नहीं है, जिस गाँव के यात्री इसमें भाग नहीं लेते हों।

जगन्नाथ पुरी मंदिर से गुंडिचा मंदिर की दूरी लगभग तीन किलोमीटर की है। तीनों रथ खींचकर गुंडिचा मंदिर पहुँचाये जाते हैं। परन्तु सूर्य के अस्ताचल गामी होने पर रथों को उसी स्थान पर रोक दिया जाता है। उस रोज भगवान का वहीं पर भोग लगाया जाता है और भोग सामग्री जगन्नाथ मंदिर से ही आती है। एक रात्रि रथ पर बिताकर अगले दिन प्रभु को उतारा जाता है, फिर आठ दिनों तक भगवान इसी मंदिर में विराजते हैं, यहीं पर नित्य भोग व आरती होती है। – मुख्य संरक्षक: राजवीर सारस्वत

गौ उत्पादों को प्रयोग में लायें

भारत के ऋषियों ने हजारों साल के वैज्ञानिक प्रयोगों के बाद योग, आयुर्वेद, गौसेवा, यज्ञ, संस्कृत पठन-पाठन, मंत्रोच्चारण आदि व्यवस्थाओं को व्यापक समाज के हित में स्थापित किया था। उनकी सोच और उनका दिया ज्ञान आज भी विज्ञान की हर कसौटी पर खतरा उतरता है। पर इन मुद्दों को धार्मिक या भावनात्मक बनाकर हिंदू समाज का ही एक हिस्सा अपनी जग-हँसाई करवाता है, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि इन सब चीजों के वैज्ञानिक व आर्थिक आधार को जोर-शोर से प्रचारित किया जाये। अगर किसी को यह समझ में आ जाए कि देशी गाय उसके गौरस से बने पदार्थ और उसके गोबर और मूत्र से उस परिवार की सम्पन्नता, स्वास्थ्य, चेतना और आनन्द में वृद्धि होती है तो कोई क्यों गाय बेचे और काटेगा? ठीक ऐसे ही अगर देशवासियों को पता चल जाए कि जर्सी गाय का दूध पीने के कितने नुकसान हैं तो लोग अपने आप ही देशी गाय के दूध-घी को अपनाने लगेंगे और प्रयासपूर्वक देशी गाय को पालेंगे भी और उसके उत्पादों का भी प्रमुखता से उपयोग करेंगे।

कुल मिलाकर बात इतनी-सी है कि देशी गाय, गौवंश, बिना घालमेल के शुद्ध आयुर्वेदिक परम्परा और भारत की पुरातन प्राकृतिक कृषि व्यवस्था की स्थापना ही भारतीय समाज को सुखी, सम्पन्न और स्वस्थ बना सकती है। इसके लिए हर समझदार व्यक्ति को जागरूक और सक्रिय होना पड़ेगा ताकि हम लाभ के पीछे भागने वाली कम्पनियों के मकड़जाल से छूट कर भारत के हर ग्राम को गोकुल बना सकें।

नाम की महिमा

कपिल कुमार

एक अनपढ़ आदमी एक महात्मा जी के पास जाकर बोला, महाराज! हमको तो कोई सीधी-सादी बात बता दो, हम भगवान का नाम लेंगे। महात्माजी ने कहा- तुम 'अघमोचन-अघमोचन' ('अघ' यानि पाप, 'मोचन' यानि छुड़ाने वाला) नाम लिया करो।' अब वह बेचारा गाँव का आदमी 'अघमोचन-अघमोचन' करता हुआ चला, पर गाँव जाते-जाते 'अ' भूल गया। वह 'घमोचन-घमोचन' बोलने लगा।

एक दिन वह हल जोत रहा था और 'घमोचन-घमोचन' कर रहा था, इतने में वैकुंठ लोक में भगवान भोजन करने बैठे। उनको हँसी आ गयी। लक्ष्मीजी ने पूछा- 'आप क्यों हँसते हो?' भगवान बोले- आज हमारा भक्त एक ऐसा नाम ले रहा है कि वैसा नाम तो किसी शास्त्र में है ही नहीं। लक्ष्मी जी बोली- तब तो हम उसको देखेंगे और सुनेंगे कि कौन-सा नाम ले रहा है।

लक्ष्मी-नारायण दोनों खेत में पहुँचे। पास में गड्ढा था। भगवान स्वयं तो वहाँ छिप गये और लक्ष्मीजी भक्त के पास जाकर पूछने लगीं- 'अरे, तू यह क्या 'घमोचन-घमोचन' बोल रहा है?' उन्होंने एक बार, दो बार, तीन बार पूछा, परंतु वह कुछ उत्तर ही न दे। उसने सोचा कि इसको बताने में हमारा नाम-जप छूट जायेगा। अत: वह चुप रहा, बोला ही नहीं। जब बार-बार लक्ष्मी जी पूछती रहीं तो अंत में उसको गुस्सा आया, गाँव का आदमी तो था ही, बोला- 'जा-जा! तेरे खसम (पति) का नाम ले रहा हूँ।'

अब तो लक्ष्मी जी डरीं कि यह तो हमको पहचान गया। फिर बोलीं- 'अरे, तू मेरे खसम को जानता है क्या? कहाँ है मेरा खसम?' वह फिर झुँझलाकर बोला- 'वहाँ गड्ढे में है!' लक्ष्मी जी समझ गईं कि इसने हमको पहचान लिया है। नारायण भी वहाँ आ गये और बोले- 'लक्ष्मी! देख ली मेरे नाम की महिमा। यह 'अघमोचन' और 'घमोचन' का भेद भले न समझता हो, लेकिन हम तो समझते हैं कि यह हमारा ही नाम ले रहा है। यह हमारा ही नाम समझकर 'घमोचन' नाम से हमको ही पुकार रहा है। भगवान ने भक्त को दर्शन देकर कृतार्थ किया।

भक्त शुद्ध-अशुद्ध, टूटे-फूटे शब्दों से अथवा गुस्से में भी, कैसे भी भगवान का नाम लेता है तो भगवान का हृदय उससे मिलने को लालायित हो उठता है। ये है नाम की महिमा।

तुलसी अपने राम को रींझ भजो या खींझ।
खेत पड़े जमजात है उल्टो-सीधो बीज॥

खोना और पाना

पाने से पहले न पाने का उतना दु:ख नहीं होता, जितना पाकर खो जाने के पश्चात् होता है। पाने के बाद खोना निश्चित ही है, क्योंकि यह तो हो सकता है कि किसी का किसी वस्तु, व्यक्ति एवं अधिकार से संयोग न हो, किंतु यह नहीं हो सकता कि संयोग होने के पश्चात् वियोग न हो। अत: सिद्ध हुआ कि पाने में खोना और खोने में रोना निश्चित है, इसलिये विवेकीजन पाने की इच्छा के रोग से मुक्त रहते हैं। यही सफल जीवन का आधार है।

इच्छापूर्ति वृक्ष

पूर्णिमा त्यागी

एक घने जंगल में एक इच्छापूर्ति वृक्ष था। उसके नीचे बैठकर कोई भी आदमी कैसी भी इच्छा प्रगट करता, उसकी वह इच्छा तुरंत पूरी हो जाती थी। इस बात के वास्तविक सच्चाई को बहुत कम लोग जानते थे क्योंकि उस घने जंगल में जाने की कोई हिम्मत ही नहीं करता था। एक बार संयोग से एक थका व्यापारी उस वृक्ष के नीचे आराम करने के लिए बैठ गया। उसे पता ही नहीं चला, कब उसकी नींद लग गयी। जागते ही उसे बहुत भूख लगी तो उसने आसपास देखकर सोचा कि काश कुछ खाने को मिल जाता तो आनंद आ जाता। उसके इतना सोचते ही स्वादिष्ट पकवानों से भरी थाली हवा में तैरती हुई उसके सामने आ गई। व्यापारी भरपेट खाना खाने के बाद सोचने लगा, काश पीने के लिए भी कुछ मिल जाता। तत्काल उसके सामने हवा में तैरते हुए अनेक प्रकार के शरबत आ गए। शरबत पीने के बाद वह सोचने लगा कि कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ। हवा में खाना और पानी प्रकट होते पहले कभी नहीं देखा... जरूर इस पेड़ पर कोई भूत है, जो मुझे खिला-पिलाकर बाद में खा जाएगा। उसके इतना सोचते ही तत्काल उसके सामने एक भूत प्रगट हुआ और उसे खा लिया।

इस प्रसंग से आप सीख सकते हैं कि हमारा मस्तिष्क ही हमारा इच्छापूर्ति वृक्ष है। आप जिस चीज की प्रबल कामना करेंगे, वह आपको अवश्य मिल जाएगी। अधिकांश लोगों को उनके जीवन में बुरी चीजें इसलिए मिलती हैं क्योंकि वे बुरी चीजों की ही ज्यादा कल्पना करते हैं। बारिश में भीगने से कही मैं बीमार न हो जाँऊ और वह बीमार हो जाता है। इंसान

सोचता है मेरी तो किस्मत ही खराब है और उसकी किस्मत सचमुच खराब हो जाती है।

इस तरह आप देखेंगे कि आपका अवचेतन मन इच्छापूर्ति वृक्ष की तरह ही है। आपकी इच्छाओं को वह पूरी ईमानदारी से पूर्ण करता है, इसलिए हर इंसान को अपने मस्तिष्क में विचारों को सावधानी से प्रवेश करने की अनुमति देनी चाहिए। विचार जादूगर की तरह होते हैं, जिन्हें बदलकर आप अपना जीवन बदल सकते हैं। बाहर की दुनिया बिल्कुल वैसी ही है, जैसा हम अंदर से सोचते हैं। हमारे विचार ही चीजों को सुंदर और बदसूरत बनाते हैं। पूरा संसार हमारे अंदर समाया हुआ है। जरूरत है तो बस सही रोशनी में सही चीजों को रखकर देखने की। मुझे जो प्राप्त है, वही पर्याप्त है। इस बात की वास्तविक सच्चाई को समझकर सुखी जीवन जीने का प्रयास करें।

भगवा ध्वज आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक

चाणक्य जैसे गुरु ने चंद्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया और समर्थ गुरु रामदास ने छत्रपति शिवाजी के भीतर बर्बर मुस्लिम आक्रमणकारियों से राष्ट्र रक्षा की सामर्थ्य विकसित की। मगर इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि बीती सदी में हमारी गौरवशाली गुरु-शिष्य परम्परा में कई विसंगतियाँ आ गईं। इस परिवर्तन को लक्षित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के समय भगवा ध्वज को गुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसके पीछे मूल भाव यह था कि व्यक्ति पतित हो सकता है, पर विचार और पावन-प्रतीक नहीं। विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन गुरु रूप में इसी भगवा ध्वज को नमन करता है। गुरु पूर्णिमा के दिन संघ के स्वयंसेवक गुरु दक्षिणा के रूप में इसी भगवा ध्वज के समक्ष राष्ट्र के प्रति अपना समर्पण व श्रद्धा निवेदित करते हैं। उल्लेखनीय है कि इस भगवा ध्वज को गुरु की मान्यता यूं ही नहीं मिली है। यह ध्वज तपोमय व ज्ञाननिष्ठ भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक सशक्त व पुरातन प्रतीक है। उगते हुए सूर्य के समान इसका भगवा रंग भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक ऊर्जा, पराक्रमी परम्परा एवं विजय भाव का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक है। संघ ने उसी समय पवित्र भगवा ध्वज को गुरु के प्रतीक रूप में स्वीकार किया है जो कि हजारों वर्षों से राष्ट्र और धर्म का ध्वज था।

पाश्चात्य जगत और हम

स्वामी विवेकानन्द से पूछा गया कि एक अच्छे समाज की पहचान क्या होनी चाहिए। उनका उत्तर था- प्रत्येक व्यक्ति किसी एक को माने और किसी दूसरे से घृणा न करे। अमेरिका के एक राष्ट्रपति भारत आए। उन्होंने नेहरूजी से पूछा कि भारत देश की सबसे बड़ी विशेषता क्या है? पं. नेहरू का उत्तर था- 'यहाँ सत्ताधिकारी नीचा है और त्यागी ऊँचा है। बादशाह या सम्राट साधु-संतों के चरणों में झुकते रहे हैं। संत राजदरबार में नहीं जाते। राजा उनकी कुटिया में आते रहे हैं।

आदर्श और नैतिक आचरण के बिना किसी भी समाज की नींव मजबूत नहीं हो सकती। विज्ञान की उन्नति से भौतिक सुख मिल सकते हैं, मानसिक शांति नहीं। अमेरिका में भौतिक सुख पराकाष्ठा पर पहुँच रहे हैं, परंतु नींद की गोलियाँ सबसे अधिक वहीं बिकती हैं। सबसे ज्यादा तनावजन्य रोग वहीं हैं। वहाँ मानसिक सुख नहीं है, शांति नहीं है, विश्वास और प्रेम नहीं है। असुरक्षा की भावना के कारण सहज जीवन जीना उनके लिए कठिन हो गया है।

इसी कारण पाश्चात्य जगत भारत के योग और अध्यात्म की शरण में आ रहा है और हम हैं कि उनकी झूठन को स्वीकार कर रहे हैं। अपने आधार को छोड़ने की गलती कर रहे हैं। अध्यात्म और नैतिकता, परस्पर सहयोग और प्रेम हमारे स्थायी स्तम्भ हैं। इन्हीं पर हमारा समाज टिका है, इन्हीं को हमें मजबूत करना है।

अहिक्षेत्र शिव मंदिर

अहिक्षेत्र (बरेली) में अभी हाल की पुरातात्विक खुदाई के दौरान एक अति प्राचीन विशाल शिव मंदिर के भग्नावशेष मिले हैं, जो अतिशय भव्य है। अभी तक हुए खनन में इस मंदिर की ऊँचाई 22 मीटर (लगभग 74 फीट) है। इसे 'पिरामिड' की शक्ल से निर्मित किया है और इसकी चोटी पर शिवलिंग विराजमान है। देखा जाये तो पिरामिड वास्तुकला मिश्र के 'फराओ' राजवंशों की देन मानी जाती है, पर इस मंदिर के वास्तु से यह प्रमाणित होता है कि यह कला भारतवर्ष में भी यथेष्ठ विकसित थी।

जब अभी तक की खुदाई में ही यह मंदिर 22 मीटर की ऊँचाई ले चुका है तो आप कल्पना कर सकते हैं कि वास्तविक रूप में यह मंदिर कितना विशाल एवं ऊँचाई वाला रहा होगा। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि इस मंदिर को ध्वस्त करने में भी एक अन्य धर्मावलम्बी हमलावरों का हाथ रहा होगा। इस मंदिर में हिन्दू देवी-देवताओं का मूर्तिशिल्प भी मिला था, जो आजकल कई म्यूजियमों की शोभा बढ़ा रहा है।

'अहिक्षेत्र' का सम्बन्ध महाभारत के 'पांचाल' राज्य से है और इसका वर्णन महाभारत में मिलता है। वास्तव में, पांचालों की राजधानी 'काम्पिल्य' थी और यह साम्राज्य महाराज द्रुपद के अधीनस्थ था। द्रौपदी यहीं की थी, अतएव द्रौपदी का एक नाम 'पांचाली' भी है। द्रोणाचार्य द्वारा राजा द्रुपद के पराजित होने के बाद पांचाल पर अर्जुन ने कब्जा कर लिया और इसे अपने गुरु द्रोणाचार्य को उपहार-स्वरूप दान कर दिया।

कुल मिलाकर 'अहिक्षेत्र' का एक गौरवशाली इतिहास रहा है, जिस पर अभी और अधिक गवेषणा की जरूरत है। 3000 वर्ष पुराने इस भव्य मंदिर जैसा भव्य कोई भी स्थापत्य भारत में और कहीं नहीं मिला है।

कर्म ही साथ जाते हैं

ऋषभ शर्मा

एक व्यक्ति था, उसके तीन मित्र थे। एक मित्र ऐसा था जो सदैव साथ देता था। एक पल भी बिछुड़ता नहीं था। दूसरा मित्र ऐसा था, जो सुबह-शाम मिलता और तीसरा ऐसा था, जो बहुत दिनों में जब-तब मिलता। एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि उस व्यक्ति को अदालत में जाना था किसी कारणवश और किसी को गवाह बनाकर साथ ले जाना था।

अब वह व्यक्ति सबसे पहले अपने उस मित्र के पास गया जो सदैव उसका साथ देता था और बोला- 'मित्र! क्या तुम मेरे साथ अदालत में गवाह बनकर चल सकते हो? वह मित्र बोला- माफ करो दोस्त, मुझे तो आज फुर्सत ही नहीं। उस व्यक्ति ने सोचा कि यह मित्र, मेरा हमेशा साथ देता था। आज मुसीबत के समय इसने मुझे इंकार कर दिया। अब वह दूसरे मित्र के पास गया जो सुबह-शाम मिलता था और अपनी समस्या सुनाई। दूसरे मित्र ने कहा कि मेरी एक शर्त है कि मैं सिर्फ अदालत के दरवाजे तक जाऊँगा, अन्दर तक नहीं। वह बोला कि बाहर के लिये तो मैं ही बहुत हूँ मुझे तो अन्दर के लिये गवाह चाहिए। फिर वह थक हारकर अपने तीसरे मित्र के पास गया जो बहुत दिनों में मिलता था और अपनी समस्या सुनाई। तीसरा मित्र उसकी समस्या सुनकर तुरन्त उसके साथ चल दिया।

आप सोच रहे होंगे कि वो तीन मित्र कौन हैं? जैसे हमने तीन मित्रों की बात सुनी वैसे ही हर व्यक्ति के तीन मित्र होते हैं। सबसे पहला मित्र है हमारा अपना 'शरीर'। हम जहाँ भी जायेंगे, शरीर रूपी पहला मित्र हमारे साथ चलता है। एक पल, एक क्षण भी हमसे दूर नहीं होता। दूसरा मित्र है शरीर के 'सम्बन्धी' जैसे- माता-पिता, भाई-बहन, मामा-चाचा इत्यादि जिनके साथ रहते हैं, जो सुबह-दोपहर शाम मिलते हैं और तीसरा मित्र है- हमारे 'कर्म', जो सदा ही साथ जाते हैं।

आप सोचिये कि आत्मा जब शरीर छोड़कर धर्मराज की अदालत में जाती है, उस समय शरीर रूपी पहला मित्र एक कदम भी आगे चलकर साथ नहीं देता। जैसे कि उस पहले मित्र ने साथ नहीं दिया। दूसरा मित्र, सम्बन्धी श्मशान घाट तक यानी अदालत के दरवाजे तक ही जाते हैं तथा वहाँ से फिर वापिस लौट जाते हैं और तीसरा मित्र आपके कर्म हैं। कर्म जो सदा ही साथ जाते हैं, चाहे अच्छे हों या बुरे।

अगर हमारे कर्म सदा हमारे साथ चलते हैं तो हमको अपने कर्म पर ध्यान देना होगा, अगर हम अच्छे कर्म करेंगे तो किसी भी अदालत में जाने की जरूरत नहीं। इसलिये हमें भगवान् का आश्रय लेकर अपने कर्म करते रहना है।

हमारा महान इतिहास कैसे खत्म किया गया?

- आचार्य चाणक्य और स्वामी विवेकानंद की जगह गाँधी को महात्मा बोलकर हिंदुस्तान पर क्यों थोप दिया गया?
- जो स्थान महान मराठा क्षत्रिय वीर शिवाजी को मिलना चाहिये वो क्रूर और आतंकी औरंगजेब को कैसे मिल गया?
- हिन्दू **राजा** सूरजमल व सवाई जयसिंह को 'महान वास्तुप्रिय' राजा ना कहकर शाहजहाँ को यह उपाधि किस आधार पर मिली?
- महाराणा प्रताप 'महान' ना होकर अकबर 'महान' कैसे हो गया?
- जो जीता वही चंद्रगुप्त ना होकर, जो जीता वही सिकंदर कैसे हो गया?
- तेजोमहालय- ताजमहल, लालकोट- लाल किला और फतेहपुर सीकरी का देवमहल- बुलन्द दरवाजा कब, क्यों और कैसे हो गया?
- राष्ट्रीय गान भी संस्कृत के वन्देमातरम् की जगह 'जन-गण-मन हो गया' कैसे और क्यों हो **गया?**
- हमारे आराध्य भगवान् राम-कृष्ण तो इतिहास से कहाँ और कब गायब हो गये पता ही नहीं चला? आखिर कैसे?
- हमारे आराध्य भगवान राम की जन्मभूमि पावन अयोध्या भी कब और कैसे विवादित बना दी गयी, हमें पता तक नहीं चला?
- अपने आप को हिन्दू कहना विवादित और सांप्रदायिक बयान कब क्यों और कैसे?
- बंटवारे के नाम पर हिन्दुस्तान को टुकड़े करने का अधिकार किसने दिया? अगर हिंदुस्तान का बंटवारा धर्म के आधार पर हुआ और पाकिस्तान मुस्लिमों के लिए और हिंदुस्तान हिन्दुओं के लिए तो भारत हिन्दूराष्ट्र क्यों नहीं बना?

- हमारे दुश्मन सिर्फ बाबर, गजनवी, लंगड़ा तैमूरलंग ही नहीं हैं, बल्कि आज के सफेदपोश सेक्यूलर भी हमारे उतने ही बड़े दुश्मन हैं, जिन्होंने हम हिन्दुओं के अन्दर हीनभावना का उदय कर सेकुलरता का बीज उत्पन्न किया और देश, धर्म तथा संस्कृति की बर्बादी का इतिहास लिख दिया।

दो मिनट चिन्तन अवश्य करें, ऐसा क्यूँ और किसने किया?

जनमेजय के भाइयों को शाप

गतांक से आगे.....

परिक्षित्-नन्दन जनमेजय अपने भाइयों के साथ कुरुक्षेत्र में एक बड़ा यज्ञ कर रहे थे। उनके तीन भाई थे- श्रुतसेन, उग्रसेन और भीमसेन। उस यज्ञ के अवसर पर वहाँ एक कुत्ता आया। जनमेजय के भाइयों ने उसे पीटा और वह रोता-चिल्लाता अपनी माँ के पास गया। रोते-चिल्लाते कुत्ते से माँ ने पूछा- 'बेटा! तू क्यों रो रहा है? किसने तुझे मारा है? उसने कहा, 'माँ! मुझे जनमेजय के भाइयों ने पीटा है।' माँ बोली- 'बेटा! तुमने उनका कुछ-न-कुछ अपराध किया होगा।' कुत्ते ने कहा, 'माँ! न मैंने हविष्य की ओर देखा और न ही किसी वस्तु को चाटा। मैंने तो कोई अपराध नहीं किया।' यह सुनकर माता को बड़ा दु:ख हुआ और वह जनमेजय के यज्ञ में गई। उसने क्रोध से कहा- 'मेरे पुत्र ने हविष्य को देखा तक नहीं, कुछ चाटा भी नहीं और भी उसने कोई अपराध नहीं किया। फिर इसे पीटने का कारण? जनमेजय और उनके भाइयों ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। कुतिया ने कहा, 'तुमने बिना अपराध मेरे पुत्र को मारा है, इसलिए तुम पर अचानक ही कोई महान भय आयेगा।' देवताओं की कुतिया सरमा का यह शाप सुनकर जनमेजय बड़े दु:खी हुए और घबराये भी। यज्ञ समाप्त होने पर वे हस्तिनापुर आये और एक योग्य पुरोहित ढूँढ़ने लगे, जो इस अनिष्ट को शान्त कर सके।

एक दिन वे शिकार खेलने गये। घूमते-घूमते अपने राज्य में ही उन्हें एक आश्रम मिला। उस आश्रम में श्रुतश्रवा नाम के एक ऋषि रहते थे। उनके तपस्वी पुत्र का नाम था सोमश्रवा। जनमेजय ने उस ऋषि-पुत्र को ही पुरोहित बनाने का निश्चय किया। उन्होंने श्रुतश्रवा ऋषि को नमस्कार करके कहा, 'भगवन्! आपके पुत्र मेरे पुरोहित बनें।' ऋषि ने कहा, 'मेरा पुत्र बड़ा तपस्वी और स्वाध्यायसम्पन्न है। यह आपके सारे अनिष्टों को शान्त कर सकता है। केवल महादेव के शाप को मिटाने में इसकी गति नहीं है। परन्तु इसका एक गुप्त व्रत है। वह यह कि यदि कोई ब्राह्मण इससे कोई चीज माँगेगा तो यह उसे अवश्य दे देगा। यदि तुम ऐसा कर सको तो इसे ले जाओ।' जनमेजय ने ऋषि की आज्ञा स्वीकार कर ली। वे सोमश्रवा को लेकर हस्तिनापुर आये और अपने भाइयों से बोले- 'मैंने इन्हें अपना पुरोहित बनाया है। तुम लोग बिना विचार के ही इनकी आज्ञा का पालन करना।' भाइयों ने उनकी आज्ञा स्वीकार की। उन्होंने तक्षशिला पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया।

गुरू सेवा की महिमा: उन्हीं दिनों उस देश में आयोदधौम्य नाम के एक ऋषि रहा करते थे। उनके तीन प्रधान शिष्य थे- आरूणि, उपमन्यु और वेद। इनमें आरूणि पाञ्चालदेश का रहने वाला था। उसे उन्होंने एक दिन खेत की मेड़ बाँधने के लिये भेजा। गुरू की आज्ञा से आरूणि खेत पर गया और प्रयत्न करते-करते हार गया तो भी उससे बाँध न बँधा। जब वह तंग आ गया तो उसे एक उपाय सूझा। वह मेड़ की जगह स्वयं लेट गया। इससे पानी का बहना बंद हो गया। कुछ समय बीतने पर आयोदधौम्य ने अपने शिष्यों से पूछा कि 'आरूणि कहाँ गया? शिष्यों ने कहा, 'आपने ही तो उसे खेत की मेड़ बाँधने के लिये भेजा था।' आचार्य ने शिष्यों से कहा कि चलो, हम लोग भी जहाँ वह गया है, वहीं चलें। वहाँ जाकर आचार्य पुकारने लगे, 'आरूणि! तुम कहाँ हो? आओ बेटा!' आचार्य की आवाज पहचानकर आरूणि उठ खड़ा हुआ और उनके पास आकर बोला, 'भगवन्! मैं यहीं हूँ। खेत से जल बहा जा रहा था। जब उसे मैं किसी प्रकार नहीं रोक सका तो स्वयं ही मेड़ के स्थान पर लेट गया। अब यकायक आपकी आवाज सुनकर मेड़ तोड़कर आपकी सेवा में आया हूँ। आपके चरणों में मेरा प्रणाम है। आज्ञा कीजिये, मैं आपकी क्या सेवा करूँ?' आचार्य ने कहा, 'बेटा! तुम मेड़ के बाँध को उद्दलन (तोड़-ताड़) करके उठ खड़े हुए हो, इसलिये तुम्हारा नाम 'उद्दालक' होगा।' फिर कृपादृष्टि से देखते हुए आचार्य ने और भी कहा, 'बेटा! तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया है। इसलिये तुम्हारा और भी कल्याण होगा। सारे वेद और धर्मशास्त्र तुम्हें ज्ञात हो जायेंगे।' अपने आचार्य का वरदान पाकर वह अपने अभीष्ट स्थान पर चला गया। *(क्रमश:)*

संसारकूपे पतितोऽत्यगाधे
मोहान्धपूर्णे विषयाभितप्ते।
करावलम्बं मम देहि विष्णो
गोविन्द दामोदर माधवेति।।

हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! मोहान्धपूर्ण और विषयों से घिरा हुआ यह जो संसाररूपी अगाध कुँआ है, इसमें गिरे हुए मुझको मेरा हाथ पकड़कर बाहर निकालिये।

गणेश जी द्वारा चन्द्रमा को शाप

एक बार कैलास के शिव-सदन में ब्रह्माजी शिवजी के समीप बैठे थे। उसी समय वहाँ देवर्षि नारद पहुँचे। उनके पास एक अतिशय सुन्दर और स्वादिष्ट अपूर्व फल था। वह फल देवर्षि ने शिवजी के कर-कमलों में अर्पित कर दिया। उस अद्‌भुत और सुन्दर फल को पिता के हाथ में देखकर गणेश और षडानन दोनों बालक उसे आग्रहपूर्वक माँगने लगे। तब शिवजी ने ब्रह्माजी से पछा- 'ब्रह्मन्! देवर्षि प्रदत्त यह अपूर्व फल एक ही है और इसे गणेश एवं कुमार दोनों चाहते हैं, आप बतायें, इसे किसे दूँ? चतुर्मुख ने उत्तर दिया- प्रभो! छोटे होने के कारण इस एकमात्र फल के अधिकारी तो षडानन ही हैं। शिवजी ने फल कुमार को दे दिया। किंतु पार्वतीनन्दन गणेश सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी पर कुपित हो गये।

ब्रह्माजी ने सृष्टि-रचना का प्रयत्न किया तो गणेश जी ने अद्‌भुत विघ्न उत्पन्न कर दिया। विघ्नेश्वर के भयानक स्वरूप को देखकर विधाता भयभीत होकर काँपने लगे। गजानन की विकट मूर्ति एवं ब्रह्माजी का भय और कम्प देखकर चन्द्रदेव अपने गणों के साथ हँस पड़े। चन्द्रमा को हँसते देख गजमुख को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने चन्द्रदेव को शाप दे दिया- चन्द्र! अब तुम किसी के देखने योग्य नहीं रह जाओगे और यदि किसी ने तुम्हें देख लिया तो वह पाप का भागी होगा।

चन्द्रमा श्रीहत, मलिन एवं दीन होकर अत्यन्त चिन्तापूर्वक मन-ही-मन कहने लगे। मैं सबके लिये अदर्शनीय, वर्णहीन और अत्यन्त मलिन हो गया। अब मैं पुनः कलाओं से युक्त, सुन्दर, वन्द्य और देवताओं के लिये सुखद कैसे हो सकूँगा? चन्द्रमा के अदर्शन से देवगण भी दुःखित हुए। अग्नि और इन्द्र आदि देवगण गजानन के समीप पहुँचकर उनकी भक्तिपूर्वक स्तुति करने लगे। देवताओं के स्तवन से प्रसन्न होकर गजमुख ने कहा- देवताओं! मैं तुम्हारी स्तुति से संतुष्ट हूँ। वर माँगो, मैं उसे अवश्य पूर्ण करूँगा। देवता बोले- प्रभो! आप चन्द्रमा पर अनुग्रह करें, हमारी यही कामना है। देवताओं! मैं अपना

वचन मिथ्या कैसे कर दूँ? पर शरणागत का त्याग भी सम्भव नहीं। **गणेश जी ने देवताओं से कहा- जो जानकर या अनजाने में ही भाद्र शुक्ल चतुर्थी को चन्द्र का दर्शन करेगा, वह अभिशप्त होगा। उसे अधिक दुःख उठाना पड़ेगा।**

देवताओं ने चन्द्रमा से कहा- 'चन्द्र! गजमुख पर हँसकर तुमने अपनी मूढ़ता का ही परिचय दिया है। तुमने प्रभु का अपराध किया और त्रैलोक्य संकटग्रस्त हो गया। हम लोगों ने गजानन को बड़े यत्न से संतुष्ट किया। इस कारण उन दयामय ने तुम्हें वर्ष में केवल एक दिन भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी को अदर्शनीय रहने का वचन देकर अपना शाप अत्यन्त सीमित कर दिया। तुम भी उन करुणामय की शरण लो और उनकी कृपा से शुद्ध होकर यश प्राप्त करो।' देवेन्द्र ने चन्द्रमा को गजानन के एकाक्षरी मंत्र का उपदेश किया और फिर देवगण वहाँ से चले गये।

इस प्रकार चन्द्रदेव ने गणेश को संतुष्ट करने के लिये बारह वर्ष तक कठोर तप किया। इससे आदिदेव गजानन प्रसन्न हुए। गजानन चन्द्रमा के सम्मुख प्रकट हो गये। चन्द्रदेव ने स्तवन करते हुए कहा- 'दयानिधान! मैंने अज्ञान-दोष के कारण आपके प्रति अपराध किया है, उसके लिये आप क्षमा-प्रदान करें। मैं आपकी शरण में आया हूँ। मुझ पर कृपा कीजिये।'

चन्द्रमा द्वारा किये गये स्तवन से संतुष्ट होकर गणेशजी ने कहा- 'चन्द्रदेव! पहले तुम्हारा जैसा रूप था, वैसा ही हो जायेगा, किंतु जो मनुष्य भाद्रपद-शुक्ल-चतुर्थी को तुम्हें देख लेगा, वह निश्चय ही अभिशाप का भागी होगा। उसे पाप, हानि एवं मूढ़ता का सामना करना पड़ेगा। उस तिथि को तुम अदर्शनीय रहोगे। **(भाद्रपद-शुक्ल-चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन जनित दोष दूर करने के लिये श्रीमद्‌भागवत, दशम स्कन्ध के 57वें अध्याय में वर्णित स्यमन्तकहरण का प्रसंग पढ़ना या सुनना चाहिए।)**

कृष्णपक्ष की चतुर्थी को जो लोगों द्वारा व्रत किया जाता है, उसमें तुम्हारा उदय होने पर यत्नपूर्वक मेरी और तुम्हारी पूजा होनी चाहिये। उस दिन लोगों को तुम्हारा दर्शन अवश्य करना चाहिये, अन्यथा व्रत का फल नहीं मिलेगा। तुम एक अंश से मेरे ललाट में स्थित रहो, इससे मुझे प्रसन्नता होगी। प्रत्येक मास की द्वितीया तिथि को लोग तुम्हें नमस्कार करेंगे।' परम प्रभु गजानन के वर-प्रभाव से चन्द्रदेव पूर्ववत् तेजस्वी, सुन्दर एवं वन्द्य हो गये।

मेरी कोई हानि न करे- यह अपने हाथ की बात नहीं है, पर मैं किसी की हानि न करूँ- यह अपने हाथ की बात है। कोई भी मुझे बुरा न समझे- यह अपने हाथ की बात नहीं है, पर मैं किसी को बुरा न समझूँ- यह अपने हाथ की बात है। जो अपने हाथ की बात है, उसे करना ही धर्म का अनुष्ठान है। ऐसा करने वाला पूरा धर्मात्मा बन जाता है। जो धर्मात्मा होता है, उसे सब चाहते हैं। जो स्वार्थी होता है, मतलबी होता है, दूसरों की हानि करता है, उसे कोई नहीं चाहता। इसके विपरीत जिसके हृदय में सबकी सहायता करने का, सबको सुख पहुँचाने का भाव है, उसे सब लोग चाहने लगते हैं।

श्री चतुर चिंतामणि नागा जी महाराज

इन महामुनेश्वर श्री नागा जी की जन्मभूमि पगाम थी। इनका बचपन से सुसंस्कारवश श्री भगवद् भक्ति में ही विशेष ध्यान रहता था। साधु-संतों की सेवा करना तथा संत समागम के सत्संग में इन्हें विशेष रूचि थी, सांसारिक सुख नागाजी को विषतुल्य प्रतीत होते थे। इन सब असार गृह क्लेशों से इनका मन पूर्णतया ऊब गया। दिन-रात भगवान के स्वरूप का ही चिंतन तथा श्री कृष्ण का मनन ही एकमात्र इनका प्राणाधार बन गया। सिद्ध संतों के मतानुसार जैसे नारद जी के उपदेश से ध्रुव बालक रूप में ही तप करने हेतु मधुवन गए थे। ठीक उसी प्रकार ये भी गृह से आस्था त्यागकर कोकिलावन आ गए। यह कोकिलावन श्री बिहारी जी मंदिर श्री निम्बकाचार्य संप्रदायी पीठ है। श्री महंत जी से इन्होंने गुरू दीक्षा लेकर श्री बिहारी जी महाराज की सेवा में संलग्न रहने की प्रार्थना की। परंतु गुरूदेव जी ने इन्हें ठाकुर सेवा न देकर गऊशाला की सफाई एवं गौ सेवा का भार सौंप दिया।

गुरू आज्ञा का पालन करते हुए भली प्रकार से गुरू सेवा करने लगे। चारा खिलाना, जल पिलाना, गोबर उठाकर डालना इत्यादि इनसे निवृत्ति पाकर अपने आराध्य देव के भक्तिभाव सहित दर्शन व स्तुति करना। परम पूज्य गुरूदेव के चरणों में साष्टांग दण्डवत तथा सेवा करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करना ही ये अपना परम धर्म मानते थे।

एक बार श्री नागाजी के सिर में भयानक फोड़ा हो गया, जिससे गोबर की टोकरी सिर पर रखकर चलना असहनीय हो गया परंतु सेवा की महान तपस्या कैसे छोड़ी जाये, उन्होंने सिर पर गोबर का टोकरा रखा। एक व्यक्ति ने देखा कि वह टोकर नागजी के सिर से चार अंगुल ऊपर उनके साथ-साथ चल रहा है। उसने सारा हाल गुरूजी को समझाया और महंत जी ने स्वयं जाकर देखा। श्री महंत जी भी यही चाहते थे कि मेरा उत्तराधिकारी कोई सिद्ध पुरूष हो, नागा जी की परम सिद्धि देखकर गुरूदेव अत्यंत प्रसन्न हुए। वे उन्हें और अधिक सिद्धि की परिपक्वता में देखना चाहते थे। अत: श्री नागाजी को अपने पास बुलाकर आदेश दिया। वत्स अब आप पूर्ववत सभी कार्य निपटाकर नित्य प्रति ब्रज चौरासी कोस की प्रदक्षिणा कर दोपहर को आकर भगवान का प्रसाद ग्रहण करना, सिद्ध पुरुषों के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं। श्री नागाजी गुरू आज्ञा शिरोधार्य कर गऊ सेवा व गौशाला सफाई से निवृत्त हो ब्रज परिक्रमा कर दोपहर को आकर प्रसाद ग्रहण करते। काफी दिनों बाद एक दिन श्री नागाजी प्रेम सरोवर बरसाना में आचमन कर रहे थे। उसी समय बाल रूप में श्री हरि स्वयं पधारे तथा नागाजी से कहा, बाबा क्या आप ब्रज परिक्रमा लगाते हो। नागाजी बोले, कहो क्या कहना है। भगवान बोले, 'बाबा, आप तो ब्रज परिक्रमा मार्ग छोड़कर अदंर चले आते हैं। आप सही मार्ग कदम खंडी व गहवर वन से होकर आयें तो उचित होगा। ऐसा कहकर वह अन्तर्ध्यान हो गए। दूसरे दिन श्री नागाजी ने प्रभु का बताया हुआ वही मार्ग अपनाकर प्रदक्षिणा में चल दिए, ज्यों ही वे कदम खंडी में पहुँचे ह्रीसों के वन में उनकी जटाएँ उलझ गईं, ह्रीस के कांटे दोनों ओर मोड़ लिए होते हैं, एक तरफ सुलझाए तो दूसरी तरफ बड़ी जकड़न, जब उनका वश नहीं चला तो वे वहीं पर एकदम सीधे वृक्षतने की तरह वहीं खड़े हो गए और उस विचित्र लीलाधारी का गुणगान करने लगे। नन्दगोपाल एक बच्चे का वेष धर फिर उनके पास आए और बोले, बाबा इन जटाओं को मैं सुलझाऊँ। नागाजी प्रभु की लीला को भलीभांति समझ गए और चतुरतापूर्वक बोले, यह आप अकेले के वश की बात नहीं है। इन जटाओं को तभी सुलझा सकते हैं, जब युगल जोड़ी आप सर्वेश्वरी राधा जी के साथ होंगे।

भक्त वत्सल उसी समय राधा जी के साथ प्रकट हो गए और भक्त राज की जटाओं को सुलझाया, दर्शन पाकर कृतार्थ हुए। नागाजी कोकिलावन आ गए, बिहारी मंदिर में वे अपनी गद्दी पर मूर्तिमान हैं।

समयसूचक शब्द

समयसूचक AM और PM का उद्गम स्थल भारत ही था, पर हमें बचपन से यह रटवाया गया और विश्वास दिलवाया गया कि इन दो शब्दों AM और PM का मतलब होता है:

AM: एंटी मेरिडियन (Ante Meridian)

PM: पोस्ट मेरिडियन (Post Meridian)

एंटी यानि पहले, लेकिन किसके? पोस्ट यानि बाद में, लेकिन किसके? यह कभी साफ नहीं किया गया, क्योंकि यह चुराये गये शब्द का लघुतम रूप था। हमारी प्राचीन संस्कृत भाषा ने इस संशय को अपनी आंधियों में उड़ा दिया और अब, सब कुछ साफ-साफ दृष्टिगत है।

AM = आरोहनम् मार्तण्डस्य Aarohanam Martandasya

PM = पतनम् मार्तण्डस्य Patanam Martandasya

सूर्य, जोकि हर आकाशीय गणना का मूल है, उसी को गौण कर दिया। अंग्रेजी के ये शब्द संस्कृत के उस 'मतलब' को नहीं इंगित करते, जोकि वास्तव में है। आरोहणम् मार्तण्डस्य (Arohanam Martandasaya) यानि सूर्य का आरोहण (चढ़ाव)। पतनम् मार्तण्डस्य (Patanam Martandasaya) यानि सूर्य का ढलाव।

दिन के बारह बजे के पहले सूर्य चढ़ता रहता है - 'आरोहनम् मार्तण्डस्य' (AM)। बारह बजे के बाद सूर्य का अवसानध ढलाव होता है- 'पतनम् मार्तण्डस्य' (PM)।

शनि धाम मनु भैया जी ट्रस्ट के कर्मठ सेवक

कपिल कुमार

बोधराज गैरे

जसमीत सिंह

प्रधान सेवक - हर्षवर्धन

संजीव कपूर

ऋषभ शर्मा

राजन शर्मा

रामपाल

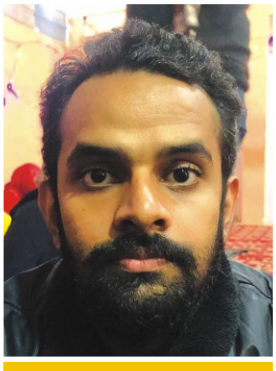
रामानन्द

दीपक कोहली

हिमांशु

साहिल मारवाह

अजय कंडवाल

जस्सु

दिनेश कुमार सिंघल

दीपक कल्शी

संजय मंडल

मंत्र चिकित्सा
REDMI NOTE 9 PRO MAX
AI QUAD CAMERA

ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ

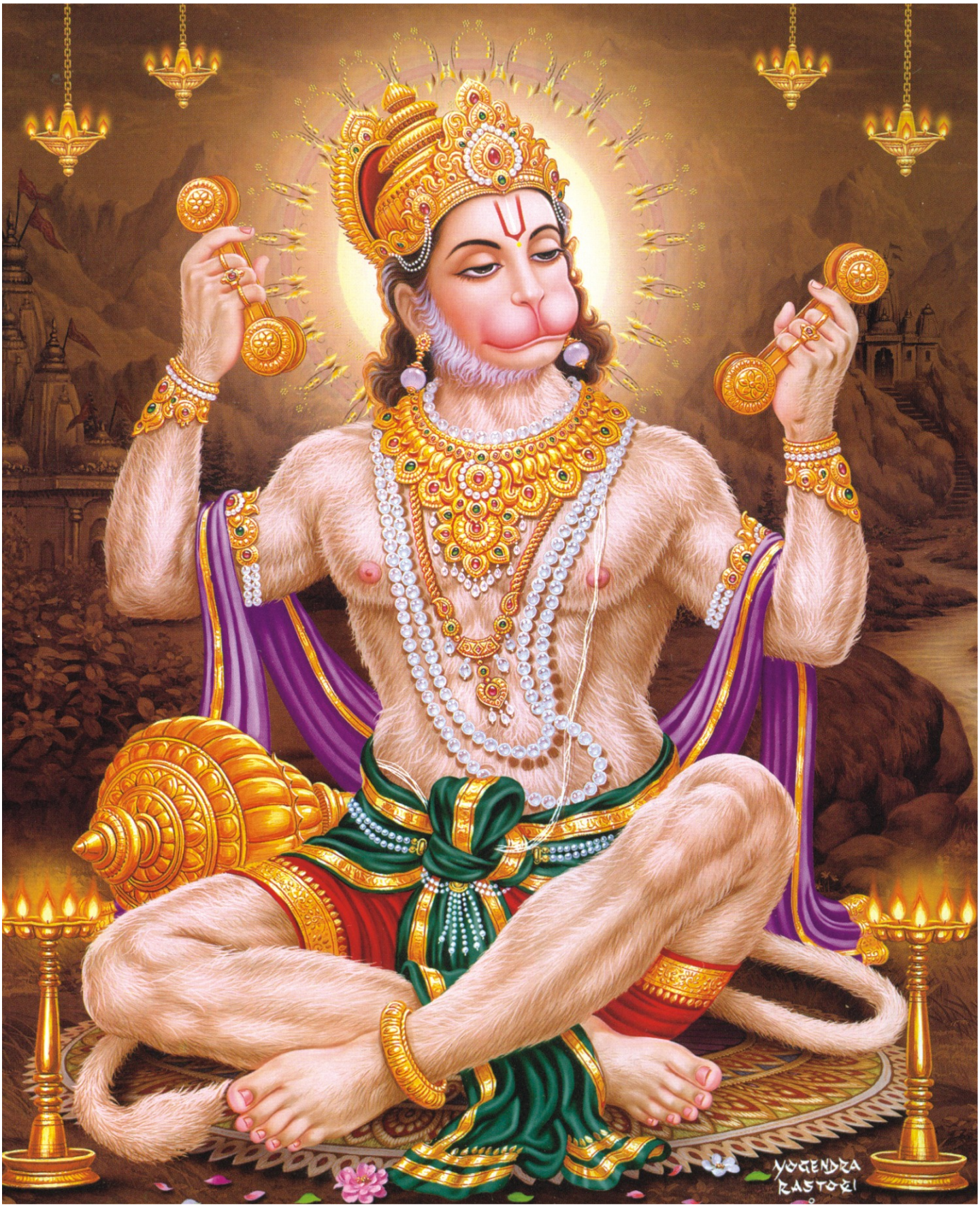

ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ • ॐ रां रामाय नमः ॐ